JAIN REFERENCE LIBRARY
ACHARYA SURENDRASURISHWARJI JAIN TATVA GYANSHALA
12, SHREYANSNATH SOCIETY, B/H DHARNIDHAR TEMPLE,
GODAVARI ROAD, VASANA, AHMEDABAD-7

4257 Search Results for ras

(1) उच्चार-प्रस्रवण निक्षेप समिति , (2) " संग्राम में मरने वाला देवता होता है " इस सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न, (3) " त्रस भूत प्राणी त्रस है, और त्रस प्राणी त्रस है. ये दोनों वाक्य समान अर्थ वाले है " ऐसा गौतम ने कहा, (4) आभोगिनी, प्रश्न आदि विद्याएं , (5) आचारसम्पदा, (6) आचारसम्पदा : संयमध्रुवयोग आदि , (7) आचारसम्पत्, (8) आचारश्रुताध्ययन, (9) आदर्शप्रश्न, (10) आदिमान् वैस्रसिक बन्ध, (11) आहार की प्रशंसा और निन्दा का निषेध , (12) आहारसमिति योग, (13) आहारसमुद्घात, (14) आहारसण्णा, (15) आहारसन्ना, (16) आहारशरीर, (17) आहारशरीरबन्धननाम, (18) आहारशरीरनाम, (19) आहारशरीरसंघातनाम, (20) आहारशुद्धि, (21) आहारसंबंधी , (22) आहारसंज्ञा, (23) आकार भावादि मात्रा से लेश्याओं का परस्पर अपरिणमन, (24) आकारशुद्धि, (25) आकरसी, (26) आक्षेपणीरस, (27) आकुंचन प्रसारण दोष, (28) आलोचना : परसाक्षी से , (29) आलोचनाकाल में प्रशस्त-अप्रशस्त द्रव्य... , (30) आम्रसालवनम्, (31) आम्रशालवन, (32) आणाईसरसेणावच्चं, (33) आनन्द के प्रव्रज्या ग्रहण करने के सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न और भगवान का समाधान , (34) आणिवित्तिबादरसम्पराय, (35) आन्तरशब्दानुविद्धसमाधिः, (36) आन्तरसोपाधिक भ्रम, (37) आन्तरसोपाधिकाध्यासः, (38) आरसिउं, (39) आरसियं, (40) आर्द्रकप्रश्न, (41) आसुरसम्पद्गुणाः, (42) आतसरीरसंवेगणी, (43) आठ कर्मो का परस्पर सहभाव, (44) आत्म प्रशंसा, (45) आत्म सम द्रष्टि , (46) आत्मप्रशंसा, (47) आत्मशरीरसंवेजनी, (48) आतुरस्मरण, (49) आउरसरणं, (50) आउरस्सरण, (51) आयारसमाही, (52) आयारसुयज्झयण, (53) आयसरीरसंवेयणी, (54) अब्भिंतरसंबुक्का, (55) अब्भुअरस, (56) अभियोगी भावना : प्रश्न, प्रश्नाप्रश्न आदि , (57) अभ्यन्तरशम्बूका, (58) अच्छुरसा, (59) अच्छुरसातदुला, (60) अचेलत्व का प्रशस्त परिणाम , (61) अद्भुत रस, (62) अद्भुत रस की उत्पत्ति और लक्षण , (63) अधर्म प्रशंसाकरण प्रायश्चित्त , (64) अधिकरणरसिद्धान्तः, (65) अदूरसामंते, (66) अगारस्थेभ्य :, (67) अङ्गुष्ठप्रसेनी, (68) अगररस, (69) अग्गरसो, (70) अग्गिरस, (71) अग्निमित्रा का प्रश्न, (72) अग्रशिर :, (73) अग्रश्रुतस्कन्ध :, (74) अहोरात्रसंख्याज्ञान हेतु करणगाथा , (75) अज्जवइरसामि, (76) अकब्बरसुरत्राण, (77) अकलेवरसेणि, (78) अकलेवरश्रेणि, (79) अक्खरसमास, (80) अक्खरसमं, (81) अक्खरसंन्निवाति, (82) अक्खरसुदणाणं, (83) अक्खरसुय, (84) अक्षर-अनक्षरश्रुत की पूर्वता , (85) अक्षरसमास, (86) अक्षरसमासावरणीय, (87) अक्षरश्रुत, (88) अक्षरश्रुत के प्रकार , (89) अक्षरश्रुत की परिभाषा , (90) अक्षरश्रुतज्ञान, (91) अक्षरश्रुतम्, (92) अक्षरसंयोग, (93) अक्षुरस, (94) अल्पऋद्धिक आदि देव-देवियों का परस्पर मध्य में से गमन सामर्थ्य का प्ररूपण, (95) अल्पतरसंक्रम, (96) अमरसागर, (97) अमरसाल, (98) अमरसेण, (99) अमरसेन , (100) अमरसोवमं, (101) अमयरसरसोवसं, (102) अम्ल रस, (103) अमृतरसा, (104) अमृतरसायन, (105) अनाचारश्रुतम्, (106) अनादि विस्रसाबन्ध, (107) अणगार स्वरूप की प्रशंसा, (108) अनगारश्रुत, (109) अणगारस्सभिक्खू, (110) अणगारसुय, (111) अणगारसुयं, (112) अणक्खरसुय, (113) अनक्षरश्रुत, (114) अनन्तरक्षेत्रस्पर्श, (115) अनन्तरसिद्ध केवलज्ञान , (116) अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, (117) अनन्तरसिद्धकेवलज्ञान, (118) अणरस, (119) अनशन के लिए अप्रशस्त-प्रशस्त स्थान , (120) अनवेक्ष्यसंस्तरसंक्रम, (121) अंबाड (तिरस + कृ), (122) अंबरसे, (123) अंडज आदि त्रस, (124) अनेक लोगों ने नन्द की प्रशंसा की और वह हर्षित हुआ , (125) अंगारसगडी, (126) अंगारशकटिका, (127) अंगिरस्, (128) अंगिरस, (129) अङ्गिरस, (130) अंगिरसा, (131) अंगुलफरस, (132) अङ्गुष्ठप्रश्न, (133) अनिष्टप्रसंङ्गः, (134) अणिविटिटबादरसम्पराय, (135) अनिवृत्तिबादरसम्पराय, (136) अनिवृत्तिबादरसंपराय गुणस्थानक, (137) अंजू के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न, (138) अन्तरशौचम्, (139) अन्तरसोपाधिकभ्रमः, (140) अनुभागह्रस्व, (141) अनुभ्रष्ट, (142) अनुपकारसमः, (143) अनुयोगद्वारसमास श्रुतज्ञान, (144) अन्यदृष्टिप्रशंसा, (145) अन्यदृष्टिप्रशंसा अतिचार, (146) अन्यतीर्थिक प्रशंसा, (147) अन्यतीर्थिकों की प्रशंसा करने का प्रायश्चित्त सूत्र , (148) अपकीर्णप्रसृतत्व, (149) अपरसामान्यम्, (150) अपरसंग्रह, (151) अपरसंग्रहाभास, (152) अपोरसीय, (153) अप्रकीर्णप्रसृतं, (154) अप्रमार्जित-दुष्प्रमार्जित-उच्चारप्रस्त्रवणभूमि, (155) अप्रसाद, (156) अप्रसेनिकाकुशील, (157) अप्रशस्त, (158) अप्रशस्त अवग्रह, (159) अप्रशस्त भाषा 6, (160) अप्रशस्त भावना : हिंसा आदि , (161) अप्रशस्त भावशीति, (162) अप्रशस्त भावसंयोग, (163) अप्रशस्त ध्यान, (164) अप्रशस्त नक्षत्र : संध्यागत आदि , (165) अप्रशस्त निःसरणात्मक तैजस, (166) अप्रशस्त निदान, (167) अप्रशस्त प्रभावना, (168) अप्रशस्त प्रवृत्ति, (169) अप्रशस्त राग, (170) अप्रशस्त शकुन , (171) अप्रशस्त वात्सल्य, (172) अप्रशस्त विहायोगति, (173) अप्रशस्त-इच्छा, (174) अप्रशस्त-नोआगम-भावोपक्रम, (175) अप्रशस्त-प्रशस्त लेश्या , (176) अप्रशस्त-प्रतिसेवना, (177) अप्रशस्तबृंहण, (178) अप्रशस्तध्यान, (179) अप्रशस्तोपशामना, (180) अप्रश्न विद्या, (181) अप्रसिद्ध, (182) अरस, (183) अरसाहारे, (184) अरसाहिं, (185) अरसजीवी, (186) अरसमेहं, (187) असत्य (तृतीय), (188) अरसविरस, (189) अरसेहि, (190) अरसिया, (191) अरसं, (192) अरसो, (193) अश्वरश्रुत, (194)

अष्टादशसहस्रशीलाङ्ग, (195) अष्टोत्तरसहस्त्रलक्षण, (196) अशुभ तैजसशरीरसमुद्घात, (197) असंसारसमापन्न, (198) असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, (199) असंसारसमावण्ण, (200) असंसारसमावण्णा, (201) असुरसंगीत, (202) असुरसुरं, (203) अतीर्थकरसिद्ध, (204) अतीर्थकरसिद्धकेवलज्ञान, (205) अतीर्थंकरसिद्ध, (206) अतिप्रसाधन, (207) अतिप्रसङ्गः, (208) अतिप्रसंग, (209) अट्ठारसवंजणाउलं, (210) अट्ठारसवंको, (211) अट्ठावयसेलसिहरसि, (212) अट्ठरससंपउत्त, (213) औदारिकशरीरसंघातनाम, (214) औगारिकमिश्रशरीर कायप्रयोग, (215) औगारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग, (216) अवान्तरसत्ता, (217) अवक्करस, (218) अवसरसङ्गति, (219) अविरतसम्यगद्रष्टि, (220) बादर क्षेत्रसागरोपम, (221) बादर उद्धारसागरोपम, (222) बादरसाम्पराय, (223) बादरसम्पराय, (224) बादरसम्पराय संयत, (225) बादरसूक्ष्म, (226) बादरस्थिति, (227) बाहिरसंबुक्का, (228) बाहुप्रश्न, (229) बाहुप्रश्न, (230) बालमरण की प्रशंसा के प्रायश्चित्त सूत्र , (231) बाणारसी, (232) बारहवाँ त्रसकाय अनारम्भ स्थान, (233) बारसाहदिवसे, (234) बारसावत्त, (235) बारसावय, (236) बारसभिक्खुपडिमा, (237) बारसि, (238) बहुला का प्रश्न, (239) बहुसंभारसंभिय, (240) बज्झरस, (241) बीभत्सरस, (242) भ. महावीर के समवसरण में गौतम का जन्मान्ध पुरुष के सम्बन्ध में प्रश्न, (243) भ. महावीर के समवसरण में काली रानी का प्रश्न , (244) भ. महावीर के समवसरण में शिव के विभंगज्ञान के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर, (245) भ. महावीर के तीर्थ में श्रेणिक और चेलना के अवलोकन से साधु-साध्वियों के निदान करने का प्रसंग, (246) भ. महावीर ने देवता द्वारा की गई प्रशंसा का निरूपण किया, (247) भ. महावीर ने एक आसन पर बैठे हुए चौपन प्रश्नों के समाधान कहे, (248) भ. महावीर ने कुण्डकोलिक की प्रशंसा की, (249) भ. महावीर ने मद्दुक की प्रशंसा की, (250) भ. मल्ली द्वारा चोखा के मत का निरसन, (251) भ. मल्ली के रूप की प्रशंसा, (252) भ. मल्ली के रूप की प्रशंसा. शंख राजा के दूत का मिथिला में आगमन, (253) भ. मल्ली के श्री दामगण्ड (पुष्पहार) की प्रशंसा, (254) भ. मल्ली के स्नान की प्रशंसा, (255) भास्करश्रवण, (256) भास्वरशुक्लम्, (257) भद्र का प्रश्न, (258) भद्रा (राजकुमारी) ने उनको रोका और मुनि की प्रशंसा की, (259) भद्रा ने मुनि की पुन : प्रशंसा की, (260) भद्रसेन, (261) भद्रशाल, (262) भद्रशाल वन का प्रमाण, (263) भद्रशाल वन के सिद्धायतन का प्रमाण, (264) भद्रशाल वन में सोलह पुष्करिणियाँ , (265) भद्रशालवन, (266) भद्रशालवन में आठ दिशा हस्तिकूट, (267) भगवान के कहने से गौशालक से प्रश्न किये, (268) भगवान ने कामदेव की प्रशंसा की, (269) भरत के अष्टम भक्त का पारणा और मागधतीर्थाधिपदेव का प्रसन्न होकर अष्टाह्निक महोत्सव का आदेश देना, (270) भवनवासी देवों के उत्पाद आदि के 49 प्रश्नों का समाधान, (271) भीरस, (272) भंभसारसुत, (273) भंडीरसुणए, (274) भूरसी, (275) भ्रष्ट, (276) भ्रष्टतेजाः, (277) भुरसी, (278) भुरशी, (279) बिसरा त्रसरा, (280) बंभचेरसमाहिठाण, (281) बंध विस्रसा, (282) बोज्ज (त्रस्), (283) ब्राह्मणकुण्डपुरसन्निवेश, (284) ब्रह्मशिरस्, (285) चान्द्रसंवत्सर, (286) चार अन्यतीर्थियों की श्रद्धा का निरसन , (287) चारित्रसंवर, (288) चलित रस अभक्ष्य, (289) चमरस्स-अग्गमहिसी, (290) चमरस्य-अग्रमहिषी, (291) चन्द्ररश्मि, (292) चन्द्रसेन, (293) चन्द्रशेखर, (294) चन्द्रश्री, (295) चन्द्रशृङ्ग, (296) चन्द्रसंवत्सर, (297) चन्द्रसृष्ट, (298) चन्द्रस्य अग्रमहिषी, (299) चतुःस्थानिक रस, (300) चतुरशरीरी जीव, (301) चतुरशीति समर्जितादि विशिष्ट चौबीसदंडकों और सिद्धों का अल्पबहुत्व, (302) चतुरस्र संस्थान, (303) चतुरस्त्र, (304) चतुरस्त्रानुयोग, (305) चतुरस्त्रनाम, (306) चतुरसुजांण, (307) चतुर्दशपूर्वी का ज्ञान परस्पर तुल्य , (308) चतुरिन्द्रिय त्रस के प्रकार , (309) चौबीसदंडकों और सिद्धों में चतुरशीति समर्जितादि का प्ररूपण, (310) चउडोत्तरसउ, (311) चउरसउ, (312) चौथा नियतिवादी की श्रद्धा का निरसन , (313) छत्रसिल, (314) चित्रप्रसुप्तिः, (315) चित्रसाली, (316) चित्रसालि, (317) चित्रसेन, (318) चित्रसेना, (319) चित्रसेनक, (320) चित्रशाळी, (321) चित्रशाली, (322) चित्रषेणा, (323) चित्तप्रसत्ति, (324) चोरशास्त्र, (325) च्यारसयां, (326) दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेस, (327) दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेसाओ, (328) दानरस, (329) दारसाहा, (330) दक्षिणब्राह्मणकुण्डपुरसन्निवेश, (331) डर (त्रस्), (332) दरसणियां, (333) दरशवुं, (334) दरशंन, (335) दरसिन, (336) दसारसीह, (337) दसारसोह, (338) दीक्षा के छह प्रस्थान , (339) दीर्घ-ह्रस्व अनुयोगद्वार, (340) दीर्घह्रस्व, (341) दीर्घकालद्रव्यप्रसूतिप्ररूपी, (342) देशविषय मिथ्यादृष्टिप्रशंसा, (343) देव ने स्वाभाविक रूप धारण करके कामदेव की प्रशंसा की और क्षमायाचना की, (344) देवानन्दा का यह रूप देखकर गौतमस्वामी ने प्रश्न किया और भ. महावीर ने समाधान किया, (345) देवद्युति के प्रवेश के सम्बन्ध में प्रश्न और समाधान, (346) देवताओं के मन से किये गये प्रश्नों का भ. महावीर ने मन से ही उत्तर दिया, (347) देवेन्द्रस्तव, (348) धायइपत्तरससारो, (349) ढड्ढरसरो, (350) ढड्ढरस्वर, (351) धन्ना भार्या का प्रश्न, (352) धर्मरूचि को तीक्ष्णरस के तुंबे का व्यज्जन दिया, (353) धूम्रशिखाचारण, (354) ध्रसकाइ, (355) ध्रसकइ, (356) ध्रसक्कइ, (357) ध्रसूकइ, (358) ध्रसुड, (359) दिवा - भोजन निन्दा और रात्रि - भोजन प्रशंशा के प्रायश्चित्त सूत्र , (360) दो मास प्रायश्चित्त की प्रस्थापिता आरोपणा वृद्धि , (361) दूधे वरस्या मेह, (362) दूरसादित्त, (363) दूरश्रवणत्व, (364) दूरस्पर्श, (365) दूरस्थ गंध-रस-स्पर्श का ग्रहण , (366) द्रष्ट, (367) द्रष्टा, (368) द्रष्टान्त, (369) द्रष्टान्तो के दार्ष्टान्तिक की योजना , (370) द्रष्टांतों द्वारा कषायों के स्वरूप का प्ररूपण, (371) द्रष्टये पडच्चुं, (372) द्रष्टि, (373) द्रष्टि-अविष, (374) द्रष्टिनिविष, (375) द्रष्टच्यमुष्टय, (376) द्रश्यमान द्रव्य, (377) द्रसुका, (378) द्रव्य द्रष्टि, (379) द्रव्य लेश्याओं का परस्पर परिणमन, (380) दृष्टिवाद के पांच प्रस्थान , (381) दु :प्रसभ :, (382) दुष्प्रसभ, (383) द्वारस्थगनं, (384) द्वीन्द्रिय त्रस के प्रकार , (385) द्विस्थानिक रस, (386) द्वितीय पंच महाभूतवादी की श्रद्धा का निरसन , (387) ईसरस्स, (388) ईश्वरसाक्षिप्रत्यक्षम्, (389) ईश्वरसेन, (390) एक मास प्रायश्चित्त की प्रस्थापिता आरोपणा वृद्धि , (391) एकाकी भिक्षु की अप्रशस्त विहार चर्या , (392) एकाकी भिक्षु की प्रशस्त विहार चर्या , (393) एकान्त - द्रष्टि निषेध , (394) एकक्षेत्रस्पर्श, (395) एकरस्यो, (396) एकस्थानिक

रस, (397) एलारस, (398) एरसउ, (399) गजसुकुमार के प्रति श्रीकृष्ण का राज्य ग्रहण प्रस्ताव., (400) गम्भीरशासन, (401) गणान्तरसङ्कमण, (402) गरसली, (403) गौशालक और भ. महावीर ने परस्पर एक दूसरे की मरणकाल मर्यादा का निरूपण किया, (404) गौतम का प्रश्न. भगवान का उत्तर, (405) गौतम के समीप प्रश्न के लिए प्राश्र्वापत्यश्रमण उदकपेढाल पुत्र का आना, (406) घरसूत, (407) घरसूत्र, (408) घरसुत्र, (409) घिस (ग्रस्), (410) ज्ञायकशरीरसिद्ध, (411) गंगदत्त देव के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न, (412) गोरस गोली, (413) गोरसभावित क्षेत्र उत्कृष्ट क्यों ?, (414) ग्रसत्य (द्वितीय):, (415) ग्रशामांहि, (416) हारसमुद्, (417) हारसमुद्र, (418) हास्य रस की उत्पत्ति और लक्षण , (419) हजारों राजाओं का प्रस्थान, (420) हरस, (421) हरस-वस, (422) हरसीय, (423) हेमतन्द्रसूरि:, (424) ह्रषीकेश, (425) ह्रष्यका, (426) ह्रष्यकान्ता, (427) ह्रस्व, (428) ह्रस्वकाल स्थिति, (429) ह्रस्वकालस्थितिक, (430) इक्कारस, (431) इक्कारसालंकारं, (432) इक्खुवरसमुद्द, (433) इक्षरस, (434) इक्षुरस, (435) इक्षुरसा, (436) इक्षुवरसमुद्र, (437) इन्द्रसेन, (438) इन्द्रसेना, (439) इन्द्रशर्मा, (440) इन्द्रशर्मन्, (441) इन्द्रश्री, (442) इन्द्रस्थावरकाय, (443) इन्द्रस्थावरकायाधिपति, (444) इन्द्रसुखोदयक्रिया, (445) इंगित-आकारसम्प्रज्ञ , (446) इङ्गिताकारसम्पन्न, (447) इङ्गिताकारसम्प्रज्ञ, (448) इंगियागारसंपन्ने, (449) इतरेतरसंयोग, (450) जारसेय, (451) जमाली और उसके शिष्यों का शय्या करने में - " कृत-कार्यमाण " के विषयों में प्रश्नोत्तर, (452) जयन्ती के प्रश्न और समाधान., (453) जीव-चौबीसदंडकों में कायिकादि पाँच क्रियाओं का परस्पर सहभाव, (454) जीवविषया द्रशिक्रिया, (455) जीवों का परस्पर उपकार, (456) जितशत्रु का प्रश्न, (457) जितशत्रु ने पान-भोजन की प्रशंसा की, (458) जितशत्रु ने उदगरत्न की प्रशंसा की, (459) जोतिरस, (460) ज्योतीरश्मिचारण, (461) ज्योतिरस, (462) ज्योतिरश्मि चारण, (463) ज्योतिष्क देवों के उत्पाद आदि के 49 प्रश्नों का समाधान, (464) काल आदि कुमारों सहित कूणिक का युद्ध के लिए वैशाली की ओर प्रस्थान, (465) काली रानी के प्रश्न के उत्तर में भगवान् ने कालीरानी के पुत्र कालकुमार का मरण कहा और कालीरानी स्वस्थान गई, (466) कालोद समुद्र और पुष्करवरद्वीप के प्रदेशों का परस्पर स्पर्श, (467) कालोदाई के अचित्त पुदगलों के प्रकाश उद्योतादि संबंधी प्रश्नों का (भ. महावीर) ने समाधान किया, (468) कालोदाई के अग्निकाय जलाने और बुझाने से होने वाले कर्मबन्ध संबन्धी प्रश्नों का भ. महावीर ने समाधान किया, (469) कालोदाई के पापकर्म फलविपाक संबंधी और कल्याणकर्म (धर्म) फल विपाक संबंधी प्रश्नों का महावीर ने समाधान किया, (470) कालोदायी के पंचास्तिकाय संबंधी-विविध प्रश्नों के ज्ञातपुत्र-भ. महावीर कृत समाधान, (471) कालोदसमुद्र और पुष्करवरद्वीपार्ध के प्रदेशों परस्पर स्पर्श, (472) कापोतलेश्यारस, (473) कार्मणशरीरसंघातनाम, (474) काव्यरस , (475) काव्यरस की परिभाषा , (476) कल्परस, (477) कल्याण कर्मो के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर, (478) करसाण, (479) करसण, (480) करसणी, (481) करसणु, (482) करसउ, (483) करसी, (484) करशण, (485) करशंणी, (486) करशंपुट करी, (487) करसंबाधा, (488) करुण रस की उत्पत्ति और लक्षण , (489) करुणरस, (490) कसायरस, (491) कषाय रस, (492) कषाय से चारित्रनाश : कनकरस दृष्टांत , (493) कषायरस नामकर्म, (494) कटु रस, (495) कौणिक ने धर्मदेशना की प्रशंसा की और अपने भवन को गया, (496) कयरस, (497) खादरस, (498) खातरस, (499) खदिरसार, (500) खरसाविया, (501) खरसणीउ, (502) खरसिल, (503) खरस्सर, (504) खरस्वर, (505) खरस्वर परमाधामी, (506) खत्तियकुंडपुरसंनिवेस, (507) खीलियसरीरसंघडण, (508) खीरसमुद्द, (509) खोत्तरस, (510) खुज्जसरीरसंठाण, (511) किन पुद्गलों का परस्पर बंध होता है ? (कोष्टक), (512) किण्णरस, (513) कोमलप्रश्न, (514) कोणिक का भ. महावीर के दर्शन का संकल्प और सर्व ऋद्धि से समवसरण में जाने के लिए प्रस्थान , (515) कूणिक का युद्ध के लिए प्रस्थान, (516) कूणिक सहोदर वेहल्ल ने सेचनक गंध हस्ति-क्रीड़ा की प्रशंसा की , (517) कूपदर्दुर का दृष्टान्त कहकर नारद ने द्रौपदी के रूप की प्रशंसा की, (518) कूर्म द्रष्टान्त , (519) कूटागारशाला के दृष्टांत द्वारा स्त्रियों के चतुभँगों का प्ररूपण, (520) क्रसाण, (521) क्रशन, (522) कृष्णलेश्यारस, (523) क्षायिक सम्यग्द्रष्टि, (524) क्षपकश्रेणि : अकलेवरश्रेणी , (525) क्षत्रियकुण्डपुरसन्निवेश, (526) क्षत्रियमुनि के प्रश्न, (527) क्षौमकप्रश्न, (528) क्षयिकी द्रष्टि, (529) क्षीरसमुद्र, (530) क्षीरस्तव लब्धि , (531) क्षीरस्त्राविणी, (532) क्षेत्रसामायिक, (533) क्षेत्रसमवाय, (534) क्षेत्रसंसार, (535) क्षेत्रसंयोग, (536) क्षेत्रस्पर्शना , (537) क्षेत्रस्तव, (538) क्षोदरस, (539) कुबेरश्री, (540) कुद्रष्टि, (541) कुग्जरसेना, (542) कुमारसमण, (543) कुमारसवण, (544) कुमारसेन, (545) कुमारश्रमण, (546) कुण्डकोलिक ने नियतिवाद का निरसन किया, (547) कुंजरसेणा, (548) कुटङ्केश्वरस्थान, (549) लाक्षारस:, (550) लक्खारस, (551) लौकिक द्रष्टि, (552) लवण रस, (553) लेश्याओं का रस , (554) लेश्याओं के रस, (555) लोभग्रस्त देव-मनुष्य, (556) लोहग्गलणगरसामी, (557) लोक और जीव के विषय में गौतम के प्रश्न करने पर जमाली का चुप रहना, (558) लोक, अलोक और अवकाशान्तर आदि में पूर्वापर कौन ? (रोहा अणगार के प्रश्न और समाधान), (559) लोक-स्प्रष्ट, (560) लोकोत्तरशब्दलिंगज श्रुतज्ञान, (561) लोकोत्तरशुचित्व, (562) मागध प्रस्थ, (563) माहणकुंडपुरसंनिवेश, (564) मामक, संप्रसारक , (565) मानरस, (566) मासिक और दो मासिक प्रायश्चित्त की प्रस्थापिता आरोपणा वृद्धि , (567) मधुर रस, (568) मधुररसा, (569) मध्यप्रसाद, (570) महाप्रश्नविद्या, (571) महासमरसंघाओ, (572) महाशिरस्, (573) महाशुक्र कल्प के देवों का भ. महावीर के समीप आने का प्रसंग, (574) महावीरस्तुति , (575) महेन्द्रसेन, (576) महेन्द्रसिंह, (577) महुररस, (578) महुरसर, (579) महुरस्सरा, (580) मैथू सेवन के संकल्प से परस्पर मैल निकालने के प्रायश्चित्त सूत्र , (581) मैथुन के संकल्प से परस्पर परिकर्म के प्रायश्चित्त, (582) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर नखाग्रो के परिकर्म का प्रायश्चित्त सूत्र , (583) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर अक्षिपत्र परिकर्म के प्रायश्चित्त सूत्र , (584) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर भौंह आदि रोमों के परिकर्म के प्रायश्चित्त सूत्र , (585) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर दन्त परिकर्म के प्रायश्चित्त सूत्र , (586) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर जंघादि परिकर्म के

प्रायश्चित्त सूत्र , (587) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर केश परिकर्म का प्रायश्चित्त सूत्र , (588) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर मस्तक ढकने का प्रायश्चित्त सूत्र , (589) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर ओष्ठ परिकर्म के प्रायश्चित्त सूत्र , (590) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर पैरों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (591) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर शरीर परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (592) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर उत्तरोष्ठ परिकर्म के प्रायश्चित्त सूत्र , (593) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर गण्डादि की चिकित्सा करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (594) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर कृमि निकलवाने का प्रायश्चित्त सूत्र , (595) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर व्रण की चिकित्सा करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (596) मैथुन संज्ञा में ग्रस्तों की दुर्गति, (597) मज्झरस, (598) मल्लदिन्न का चित्रसभा कराना, (599) मनःप्रश्नविद्या, (600) मन्दरशैल, (601) मन्दिरस्थविर, (602) मन्त्रशक्ति, (603) मनुषोत्तरशैल, (604) मरमरसबद, (605) मरषा, (606) मयूरसिखा, (607) मेधावी पुरुषों के प्रश्नों के भय से महावीर आरामगृह में नहीं ठहरता है l गोशालक का आक्षेप, (608) मेघोघरसियं, (609) मिश्रसम्यक्त्व, (610) मिश्रस्कन्ध वर्गणा , (611) मिश्रस्कन्धः, (612) मिश्रसंयुक्तद्रव्यसंयोग, (613) मिश्रसंयुक्तकद्रव्यसंयोग, (614) मिथ्याचारित्रसेवा, (615) मिथ्याद्रष्टिः, (616) मिथ्यादृष्टिप्रशंसा, (617) मित्रसेना, (618) मित्रश्री, (619) मित्रस्मृति, (620) मंदरसा, (621) मंसरसं, (622) मंत्रसिद्ध : स्तम्भाकर्ष , (623) मोरसिखा, (624) मोय (पेय प्रस्त्रवण) स्वरूप , (625) म्रश्रित, (626) मृगशिरस्, (627) मुंडपरसू, (628) मुनिचन्द्रसूरि, (629) मुनिसुन्दरसूरि, (630) मुणिसुंदरसूरि, (631) मुरसु, (632) नागश्री ने तीक्ष्णरस के तुंबे का व्यंजन बनाया और उसे छिपाकर रखा, (633) नारसिंह, (634) नाटकरस, (635) नगरस्य, (636) नैरस, (637) नक्षत्रसंवत्सर, (638) नमस्कारसहिता, (639) णमोक्कारसहिता, (640) नरक में परस्परोदीरित वेदना, (641) णरसीहरूव, (642) नरसिंह, (643) नत्रसंस्कार, (644) नट्टरसि, (645) नौकारसी प्रत्याख्यान सूत्र , (646) नवारसउ, (647) नवकारसही, (648) नवकारसि, (649) नीरस आहार परठने का प्रायश्चित्त सूत्र , (650) नीरसं, (651) निरस्साविणी, (652) निरस्तैना, (653) निर्ग्रन्थ - निर्ग्रन्थी नी परस्पर चिकित्सा के प्रायश्चित्त , (654) निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी के परस्पर सेवा करने के विधान , (655) निर्ग्रन्थों के प्रशस्त लक्षण , (656) निर्वाण रात्रि में घटित घटना प्रसंग , (657) निर्वेदनीरस, (658) निषिद्ध स्थानों पर उच्चार-प्रस्रवण परिष्ठापन के प्रायश्चित्त सूत्र , (659) निवृत्तिबादरसम्पराय, (660) णिव्वित्तिबादरसम्पराय, (661) निव्वित्तिबादरसंपराय, (662) नोशब्दरूपगन्धरसस्पर्शानुपाती, (663) नोत्रसनोस्थावर, (664) ओहारसंखड, (665) ओज :प्रदेशं घनचतुरस्त्रं, (666) ओज :प्रदेशं प्रतरचतुरस्त्रं, (667) ऊअरसरि, (668) ऊध्वसइं, (669) ओरस, (670) ओरस (अव + त्), (671) ओरसीउ, (672) ओरस्स, (673) ओरस्सबली, (674) ओरसु, (675) पाधरसी, (676) पाधरसीह, (677) पागारसंठिय, (678) पाणीरसउ, (679) पारस, (680) पारस पाहाण, (681) पारस पाखाण, (682) पारसदीव, (683) पारसद्वीप, (684) पारसकूल, (685) पारसकुलं, (686) पारसविसओ, (687) पारसी, (688) पारसीक, (689) पारशैल, (690) पारशर, (691) पारशरी, (692) पारशी, (693) पारशी-भेद, (694) पारशीकर, (695) पारश्ववर्ती, (696) पाश्वस्थादि वन्दन - प्रशंसन प्रायश्चित्त , (697) पात्र से त्रस प्राणी आदि निकालने के प्रायश्चित्त सूत्र , (698) पाव-सिरसि, (699) पच्छातुरस्स, (700) पच्चूरस, (701) पच्चुरस, (702) पद्मावती का पुत्र और पोट्टिला की पुत्री का जन्म के बाद परस्पर परावर्तन, (703) पकामरसभोई, (704) पनरस, (705) पणीतरसं, (706) पणीयरस, (707) पणीयरसभोई, (708) पणीयरसमोयण, (709) पणीयरसविवज्जए, (710) पर प्रशंसा, (711) परदृष्टिप्रशंसा, (712) परक्षेत्रसंसार, (713) परम्परसिद्ध केवलज्ञान , (714) परम्परसिद्धकेवलज्ञान, (715) परपाषण्डप्रशंसा, (716) परप्रशंसा, (717) परसादि, (718) परसाखि, (719) परसामान्यम्, (720) परसमय, (721) परसमयरत, (722) परसमयसुत्रं, (723) परसमयवक्तव्यता, (724) परसमयवित्, (725) परसम्पत्, (726) परसमुत्थ के प्रकार , (727) परसरइ, (728) परसरीरसंवेगणो, (729) परसशे, (730) परसवतां, (731) परसे, (732) परसी, (733) परसीधो, (734) परसेवी, (735) परषद, (736) परशरीरानवकांक्षाप्रत्यया क्रिया, (737) परशरीरसंवेजनी कथा, (738) परशीनि, (739) परशेवी, (740) परशुमुद्रा, (741) परशुराम, (742) परसिरि, (743) परसंग, (744) परसंगह, (745) परसंग्रह, (746) परसंग्रह नय, (747) परसंग्रहाभास, (748) परस्पर, (749) परस्पर आलोचना करने के विधि-निषेध , (750) परस्पर चिकित्सा करने के प्रायश्चित्त , (751) परस्पर कृतिकर्म का क्रम , (752) परस्पर प्रस्रवण ग्रहण करने का विधि-निषेध , (753) परस्पर सेवा करने का विधि-निषेध , (754) परस्पर शरीर परिकर्म प्रायश्चित्त, (755) परस्पर विरुद्ध धर्मों की सिद्धि स्याद्वाद से, (756) परस्पर व्रण की चिकित्सा के प्रायश्चित्त सूत्र , (757) परस्परगुणनिकाय, (758) परस्परकल्याण, (759) परस्परपरिहारलक्षण विरोध, (760) परस्परोदीरित दुःख, (761) परस्पेरे, (762) परस्सलोभाविल, (763) परस्सर, (764) परसु, (765) परसुहत्त, (766) परसुराम, (767) परसुविज्जा, (768) परिभ्रष्ट :, (769) परिहारस्थान ही प्रायश्चित्तस्थान , (770) परिहारी-अनुपरिहारी... : परस्पर व्यवहार , (771) परिहारिक और अपरिहारिकों के परस्पर आहार सम्बन्धी व्यवहार, (772) परिपेलवरस :, (773) परियारसद्दो, (774) पर्याय द्रष्टि, (775) पथिको के सावद्य प्रश्नो के उत्तर देने का निषेध , (776) पत्तेयरसा, (777) पेच्छाघरसंठिता, (778) फरस, (779) फरसइ, (780) फरसन, (781) फरसण, (782) फरसणा, (783) फरसनरूप, (784) फरशुराम, (785) फरसो, (786) फरसुराम, (787) फरसुरामु, (788) फुरसराम, (789) फुरसिराम, (790) पिंडरस, (791) पिंगल निर्ग्रन्थ ने लोकादि के सम्बन्ध में प्रश्न किये, (792) पंचां अंग प्रसाद, (793) पंचेन्द्रिय त्रस के प्रकार , (794) पोग्गलरस, (795) पूर्व शय्या उत्तरशय्या से बाधित , (796) पोरसी, (797) पोरसि, (798) पोट्टिला ने अमात्य के प्रसन्न होने का उपाय पूछा, (799) प्रातिहार्य-प्रसिद्ध, (800) प्रायश्चित्तवृद्धि के प्रकार : स्वस्थान-परस्थान , (801) प्रदेश द्रष्टान्त , (802) प्रदेशह्रस्व, (803) प्रदेशत : इतरेतरसंयोग, (804) प्रहारसंक्रामिणी, (805) प्रकीर्णप्रश्न-प्रकीर्णविद्य , (806) प्रमाण से मोक्ष की सिद्धि प्रश्न, (807) प्रणीत-रस, (808) प्रणीतरस भोजन वर्जन, (809) प्रणीतरसभोजन, (810) प्रसाद, (811) प्रसारणं, (812) प्रसाउ, (813) प्रसभं,

(814) प्रसज्य प्रतिषेध, (815) प्रसज्यप्रतिषेधः, (816) प्रसक्तिः, (817) प्रसङ्ग, (818) प्रसङ्गसाधन, (819) प्रसङ्गसमः, (820) प्रसन्न, (821) प्रसन्ना, (822) प्रसन्नात्मा, (823) प्रसन्नचन्द्र, (824) प्रसन्नकीर्ति, (825) प्रसरं, (826) प्रसर्पकों के चार प्रकार, (827) प्रसव्यो, (828) प्रसेन, (829) प्रसेनजित्, (830) प्रसेनिक, (831) प्रसेनिकाकुशील, (832) प्रशान्त, (833) प्रशान्तारि, (834) प्रशान्तात्मा, (835) प्रशान्तमदन, (836) प्रशान्तरस, (837) प्रशान्तरसशैलूष, (838) प्रशान्ति, (839) प्रशान्तिक्रिया, (840) प्रशास्ता, (841) प्रशास्तृदोष, (842) प्रशम, (843) प्रशमारक, (844) प्रशमात्मा, (845) प्रशस्त अवग्रह, (846) प्रशस्त भाव : उच्च स्थानगत ग्रह , (847) प्रशस्त भावना : आदि , (848) प्रशस्त भावसंयोग, (849) प्रशस्त भावयोग, (850) प्रशस्त करनोपशामना, (851) प्रशस्त मरण , (852) प्रशस्त निदान, (853) प्रशस्त निस्सरणतैजस, (854) प्रशस्त नोआगमभावोपक्रम, (855) प्रशस्त प्रवृत्ति, (856) प्रशस्त राग, (857) प्रशस्त स्थिरीकरण, (858) प्रशस्त वात्सल्य, (859) प्रशस्त विहायोगति, (860) प्रशस्त-अप्रशस्त क्षेत्र , (861) प्रशस्त-इच्छा, (862) प्रशस्ता भावशीति, (863) प्रशस्तध्यान, (864) प्रशस्तवंक, (865) प्रशस्तेन्द्रियप्रणिधि, (866) प्रशस्ति, (867) प्रशस्तोपबृंहण, (868) प्रशस्य आचार्य : आगाढप्रज्ञ आदि , (869) प्रश्न, (870) प्रश्ण, (871) प्रश्न करने की विधि , (872) प्रश्न करवुं, (873) प्रश्न कर्ता, अकर्ता , (874) प्रश्न पूछने की विधि , (875) प्रश्न व्याकरण, (876) प्रश्नादि कहने का प्रायश्चित्त सूत्र , (877) प्रश्नाप्रश्न, (878) प्रश्नाप्रश्न चारित्रकुशील, (879) प्रश्नकीर्ति, (880) प्रश्नकुशल, (881) प्रश्नप्रश्न : घण्टिकयक्ष , (882) प्रश्नवाहन, (883) प्रश्नवण, (884) प्रश्नव्याकरण, (885) प्रश्नव्याकरणदशाधर, (886) प्रश्नेणि, (887) प्रश्निका, (888) प्रश्नोत्तरविधि, (889) प्रशंस, (890) प्रशंसा, (891) प्रशंसाकृत परत्व अपरत्व, (892) प्रश्रवाहनकुलाम्बुनिधिः, (893) प्रश्नः, (894) प्रश्नवाहनक, (895) प्रश्नव्याकरण, (896) प्रश्नव्याकरणदशा, (897) प्रष्ठ, (898) प्रष्ठक, (899) प्रश्वास, (900) प्रसिद्ध, (901) प्रस्खलन्ति, (902) प्रस्नव, (903) प्रसंग, (904) प्रसंगज, (905) प्रसंगसाधन, (906) प्रसंगत्वम्, (907) प्रसंगी, (908) प्रसंजनम्, (909) प्रसंख्यानम्, (910) प्रस्फोटका, (911) प्रस्फोटना, (912) प्रसृता, (913) प्रस्तानुं, (914) प्रस्तार, (915) प्रस्ताव, (916) प्रस्तावना, (917) प्रस्तर, (918) प्रस्थ, (919) प्रस्थान वेला में शकुन-अपशकुन , (920) प्रस्थानुं, (921) प्रस्थापना में प्रतिसेवना करने पर आरोपणा , (922) प्रस्थापित, (923) प्रस्थाव, (924) प्रस्थक द्रष्टान्त , (925) प्रस्थक का दृष्टान्त , (926) प्रस्थक, वसति और प्रदेश का दृष्टान्त , (927) प्रसुप्त, (928) प्रसुत, (929) प्रतरसमुद्घात, (930) प्रथम प्रस्तट में विमान, (931) प्रथम तज्जीव तत्शरीरवादी की श्रद्धा का निरसन , (932) प्रति-प्रसव, (933) प्रतिप्रसवः, (934) प्रतिप्रश्न, (935) प्रतिप्रश्न का फल , (936) प्रतिष्ठाप्रसव, (937) प्रतितन्त्रसिद्धान्तः, (938) प्रतितंत्रसिद्धान्त, (939) प्रत्येकरस और उदकरस समुद्रों की संख्या, (940) पृथक्त्ववितर्कवीचारशुक्लध्यान, (941) पृथ्वियों का परस्पर अबाधा अन्तर, (942) पुक्खरसारिया, (943) पुक्खरसंवट्टग, (944) पुक्खरवरसमुद्द, (945) पुप्फोवयारसंठित, (946) पुरस, (947) पुरसमाणवो, (948) पुरसरि, (949) पुरश्चरणम्, (950) पुरस्कार, (951) पुष्करसारिका, (952) पुव्वावरसंजुत्तं, (953) राजप्रश्नीय, (954) राजप्रश्नकृत, (955) राजप्रश्नीय, (956) राजीवसरसी, (957) रायवरसासण, (958) रळी रसे, (959) रस, (960) रस और भाव कषाय , (961) रस बंध, (962) रस गौरव, (963) रस गृद्धि, (964) रस कषाय, (965) रस के 4 भेद, (966) रस के 5 भेद, (967) रस के 8 प्रकार, (968) रस के प्रकार , (969) रस की आसक्ति का निषेध , (970) रस परित्याग, (971) रस परित्याग का स्वरूप , (972) रस परित्याग के प्रकार , (973) रस वाणिज्य, (974) रस विद्या, (975) रस विकृति, (976) रस(सर)देवी, (977) रसाअ, (978) रसाः, (979) रसाधिकाम्मोद, (980) रसाइण, (981) रसाल, (982) रसाला, (983) रसालू, (984) रसालु, (985) रसाञ्जनम्, (986) रसास्वादः, (987) रसातलपुर, (988) रसातण, (989) रसाउ, (990) रसाउलु, (991) रसावण, (992) रसायण, (993) रसायन, (994) रसायनपाक, (995) रसायिक, (996) रसबंध, (997) रसडा, (998) रसद्द, (999) रसदेवी, (1000) रसगा, (1001) रसगारव, (1002) रसगौरव, (1003) रसघातः, (1004) रसगृद्धि का निषेध , (1005) रसगुणः, (1006) रसः, (1007) रसहरणो, (1008) रसज, (1009) रसक, (1010) रसकसवेध, (1011) रसकषाय, (1012) रसमान, (1013) रसमान प्रमाण, (1014) रसमाणप्पमाणे, (1015) रसमस, (1016) रसमेघ, (1017) रसमेह, (1018) रसमुच्छिए, (1019) रसन, (1020) रसण, (1021) रसन इन्द्रिय, (1022) रसना, (1023) रसणा, (1024) रसना डंसी, (1025) रसनाजय, (1026) रसनाम, (1027) रसनामकर्म, (1028) रसनम्, (1029) रसणीया, (1030) रसणेन्दिय, (1031) रसनेन्द्रिय, (1032) रसनेन्द्रिय असंवर (आश्रव), (1033) रसनेन्द्रिय संवर, (1034) रसनेन्द्रियनिग्रह, (1035) रसनेन्द्रियप्राण, (1036) रसनिज्जूढ, (1037) रसनिज्जूहणया, (1038) रसनिंदिउ, (1039) रसणिन्दिय, (1040) रसनिर्वृति, (1041) रसपात, (1042) रसपरिच्चाग, (1043) रसपरिच्चाओ, (1044) रसपरिच्चाय, (1045) रसपरित्याग, (1046) रसपरित्यागातिचार, (1047) रसर्द्धि, (1048) रसरंग, (1049) रसऋद्धि, (1050) रसट्ठाए, (1051) रसत्याग, (1052) रसवाणिज्ज, (1053) रसवाणिज्य, (1054) रसवती, (1055) रसवेद, (1056) रसविपाक, (1057) रसविशेष, (1058) रसविवर्जन, (1059) रसय, (1060) रसया, (1061) रसेसि, (1062) रशी, (1063) रश्म, (1064) रश्मिकलाप, (1065) रश्मिवेग, (1066) रसिए, (1067) रसिगा, (1068) रसिणी, (1069) रसिर, (1070) रसितं, (1071) रसिय, (1072) रसिया, (1073) रसियं, (1074) रसंत, (1075) रसो, (1076) रसोदए, (1077) रसोई, (1078) रसोतीए, (1079) रसोतीगिह, (1080) रसोयणी, (1081) रसोयि, (1082) रस्सी, (1083) रस्सीमंडल, (1084) रसुंठ, (1085) रत्नप्रभापृथ्वी के असंख्यात विस्तृत नरकावासों में उत्पाद आदि के प्रश्नों का समाधान, (1086) रत्नप्रभापृथ्वी के संख्यात विस्तृत नरकावासों में नैरयिकों के संख्यात विषयक 49 प्रश्नों का समाधान, (1087) रत्नप्रभापृथ्वी के संख्यात विस्तृत नरकावासों में उद्वर्तन करने वाले नारकों के 39 प्रश्नों का समाधान, (1088) रत्नप्रभापृथ्वी के संख्यात विस्तृत नरकावासों में उत्पन्न होने वाले नारकों के 39 प्रश्नों का समाधान, (1089) रौद्र रस की उत्पत्ति और लक्षण ,

(1090) रोरसणिय, (1091) रुचिरशिष्ट, (1092) रुचिरशृंग्ङ, (1093) ऋद्धि की अपेक्षा देव-देवियों का परस्पर मध्य में से व्यतिक्रमण सामर्थ्य का प्ररूपण, (1094) रुद्रसेन, (1095) रुद्रसोमा, (1096) ऋषिभद्रपुत्र सम्बन्धित गौतम का प्रश्न और भ. महावीर का उत्तर, (1097) साधर्मिकों की आलोचना तथा प्रस्थापनाविधि , (1098) साधु-साध्वी की परस्पर सेवा-विधि, अर्हता , (1099) सादि-अनादि विस्त्रसाकरण, अजीवभावकरण , (1100) सादिक विस्त्रसा बन्ध, (1101) सादिविस्रसाबन्ध, (1102) सागरसरिनामघेज्जा, (1103) सागरसेण, (1104) सागरसेन, (1105) सागरसेना, (1106) सालिभसेल्लसरसा, (1107) सामान्यद्रष्ट, (1108) सामायिक और क्षेत्रस्पर्शना , (1109) सारस, (1110) सारसा, (1111) सारसापारस, (1112) सारसमुच्चय, (1113) सारसत, (1114) सारसौख्य, (1115) सारसवण्णा, (1116) सारसी, (1117) सारस्सय, (1118) सारस्वत, (1119) सारस्वतादि देवों की संख्या और परिवार, (1120) सार्थ का प्रस्थान और शकुन , (1121) सावित्रसंवत्सर, (1122) सदारसंतोस, (1123) सदारसंतोसिए, (1124) सद्दालपुत्र के सामने देवता ने भ. महावीर की प्रशंसा की, (1125) सदृश पुद्गलों में द्विगुण स्पर्श अधिक हो तो परस्पर बंध होता है, (1126) सगरसुत, (1127) सहदारदरसी, (1128) सहसरसनि, (1129) सहस्त्ररश्मि, (1130) सहस्त्रशीर्ष, (1131) सजरस, (1132) समचतुरस्र, (1133) समचतुरस्रसंस्थान नामकर्म, (1134) समचतुरस्त्र, (1135) समचतुरस्त्र संस्थान, (1136) समचतुस्त्रसमस्थान, (1137) समचउरससंठिया, (1138) समचउरस्स, (1139) समरसद्दहय, (1140) समरसइ, (1141) सम्प्रसादः, (1142) समुद्रसेन, (1143) समुद्रसंगम, (1144) सम्यक् द्रष्टि, (1145) सम्यक्त्व पराक्रम के प्रश्नोत्तर , (1146) सणसत्तरस, (1147) सणिच्छरसंवच्छर, (1148) सणिंचरसंवच्छर, (1149) सपारस, (1150) सपरस, (1151) सपिंडरस, (1152) सरल और वक्र, सरल द्रष्टि और वक्र द्रष्टि आदि , (1153) सरस, (1154) सरस निरस पानी में समभाव का विधान , (1155) सरस-मणु, (1156) सरसा, (1157) सरसद, (1158) सरसइ, (1159) सरसपउम, (1160) सरसर, (1161) सरसरपंती, (1162) सरसरपंतिआ, (1163) सरसरपंतिय, (1164) सरसरपंतिया, (1165) सरसरट, (1166) सरसरी, (1167) सरसती, (1168) सरसति, (1169) सरसउं, (1170) सरसउपाटण, (1171) सरसवहिय, (1172) सरसवेल, (1173) सरसे, (1174) सरसी, (1175) सरसीय, (1176) सरसेजं, (1177) सरसेलि, (1178) सरशी, (1179) सरसि, (1180) सरसिगाल, (1181) सरसिउं, (1182) सरसिव, (1183) सरसिय, (1184) सरस्सई, (1185) सरस्सर, (1186) सरस्सती, (1187) सरस्वती, (1188) सरस्यः, (1189) सरस्युं, (1190) सरीरसक्कारपोसह, (1191) सर्वाक्षरसन्निपात, (1192) सर्वाक्षरसन्निपाती, (1193) सर्वघाति रसस्पर्धक देशघाति में परिणत , (1194) सर्वतंत्रसिद्धान्तः, (1195) सर्वविषयमिथ्यादृष्टिप्रशंसन, (1196) सत्कार पुरस्कार, (1197) सत्कार पुरस्कार परीषह , (1198) सत्कार- पुरस्कारपरीषहजय, (1199) सत्कार-पुरस्कार, (1200) सत्कार-पुरस्कार परीषह , (1201) सत्कारपुरस्कार परीषह, (1202) सत्कारपुरस्कारपरीषहजय, (1203) सौरसेन, (1204) सव्वक्खरसन्निवाई, (1205) सव्वक्खरसन्निवाइ, (1206) सव्वक्खरसन्निवाइणो, (1207) सव्वक्खरसन्निवात, (1208) सव्वरसालू, (1209) सीमन्धरस्वामी, (1210) सीमंधरसामि, (1211) सीरष, (1212) सीयलघरसमाण, (1213) शान्त रस की उत्पत्ति और लक्षण , (1214) शब्द, रूप, गन्ध, रस और स्पर्शादि के सम्बन्ध में असावद्य भाषा विधि , (1215) शब्दवरसेन, (1216) शैक्ष और रात्निक के पारस्परिक कर्त्तव्य , (1217) शक्र और ईशानेद्र के परस्पर व्यवहारादि का प्ररूपण, (1218) शक्र का पूर्व-भव के सम्बन्ध में प्रश्न, (1219) शक्रादि की गति के विषय में गौतम के प्रश्न और भगवान के समाधान, (1220) शक्रस्तव 2 अधिकार, (1221) शक्रस्तुति , (1222) शक्रस्यअग्रमहिषी, (1223) शक्तिवरसेन, (1224) शल्योद्धकरण आवश्यक : अश्ववत् प्रस्थान , (1225) शनैश्चरसंवत्सर, (1226) शरशति, (1227) शरीरसम्पदा, (1228) शरीरसम्पदा : आरोह-परिणाह आदि , (1229) शरीरसम्पत्, (1230) शरीरसंघातनाम, (1231) शरीरसंघातनामकर्म, (1232) शरीरसंलेखना, (1233) शर्कराप्रभापृथ्वी से अधःसप्तम पृथ्वी-पर्यन्त नरक पृथ्वियों में उत्पाद आदि के प्रश्नों का समाधान, (1234) शस्त्रसंबंधी वेदना , (1235) शीलरहित और शीलसहित श्रमणोपासक के प्रशस्त-अप्रशस्त , (1236) शिरसिज , (1237) शिरस्त्र, (1238) शिष्य के प्रश्न पर गुरु द्वारा उत्तर , (1239) शंख और पोक्खली श्रसणोपासक, (1240) शूरसेन, (1241) शूरसेना, (1242) श्रावक सम्यक द्रष्टि, (1243) श्रमणो के पारस्परिक व्यवहार , (1244) श्रशना, (1245) श्रष्ट, (1246) श्रष्टी, (1247) श्रस्तदर्शन, (1248) श्रस्तरः, (1249) श्रीधरसेन, (1250) श्रीकृष्ण का प्रस्थान, (1251) श्रेणिक का प्रसन्न होना और क्षमायाचना करना, (1252) श्रेणिक ने स्वप्न-प्रशंसा की , (1253) श्रृंगार रस की उत्पत्ति और लक्षण , (1254) सिद्ध होने वाले के संहनन के सम्बन्ध में गौतम के प्रश्न, (1255) सिरस, (1256) सिरसावत्त, (1257) सिरसे, (1258) सिरसेजइ, (1259) सिरशव, (1260) सिरसिज, (1261) सिरसोसिरि, (1262) संचारसम, (1263) संद्रष्टि, (1264) संप्रसादावस्था, (1265) संसारसमावण्ण, (1266) संसारसरणिदेश्यानि, (1267) संसारस्थ जीव, (1268) संस्कारस्कन्ध, (1269) संस्कारस्कन्धः, (1270) संवेजनीय रस, (1271) संयमरमण : सुरसुख , (1272) सोमा की वंध्यत्व-प्रशंसा, (1273) सोमिल का काष्ठ मुद्रा से मुखबन्धन करके महाप्रस्थान करना, (1274) सोमिल के यात्रादि प्रश्नों का भगवान ने समाधान किया, (1275) सूक्ष्म क्षेत्रसागरोपम, (1276) सूक्ष्म-उद्धारसागरोपम, (1277) सूरसेन, (1278) सूरसेण, (1279) सूरसिंग, (1280) सूरसिरी, (1281) सूरसिट्ठ, (1282) सूरस्सअग्गमहिसी, (1283) सूरवरसमुद्द, (1284) सूर्यवरसमुद्र, (1285) सूत्रसम, (1286) सूत्रसंश्रय, (1287) सूत्रस्पर्शिक निर्युक्ति-अनुगम , (1288) सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्ति, (1289) सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगम, (1290) सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगमः, (1291) सूत्रस्य उजद्देशनाचार्यः, (1292) स्थावरकायिक जीवों का परस्पर अवगाढ़त्व का प्ररूपण, (1293) स्थविरसम्भूतविजय, (1294) स्थुलभद्रस्वामी, (1295) स्त्रष्टा, (1296) सुबाहुकुमार के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न, (1297) सुभद्रादि कौणिक की भार्याओं ने धर्मदेशना की प्रशंसा की और अपने निवास (अन्त :पुर) को गयी, (1298) सुदर्शन सेठ ने काल के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे, (1299) सुदर्शन सेठ ने पल्योपमादि के क्षय और अपचय आदि के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे,

(1300) सुकुमालिका ने सागर के प्रसन्न होने के उपाय पूछा, (1301) सुपक्खोतरसे, (1302) सुप्रसाद, (1303) सुप्रसाह, (1304) सुप्रसन्न, (1305) सुप्रसिद्धा, (1306) सुरसाल, (1307) सुरसन्निभ, (1308) सुरसरी, (1309) सुरसेन, (1310) सुरश्रेष्ट, (1311) सुरसुन्दर, (1312) सुरसुन्दरी, (1313) सुरसुर, (1314) सुरसुत, (1315) सुवर्णकूलाद्वीप और रष्यकूलाद्वीप के प्रमाणादि , (1316) स्व-स्व-प्रवाद-प्रशंसा एवं सिद्धि लाभ का दावा , (1317) स्वारसिकः, (1318) स्वारसिकलक्षणा, (1319) स्वच्छन्दाचारी की प्रशंसा एवं वंदना करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1320) स्वदाररसंतोषव्रत, (1321) स्वदारसन्तोष , (1322) स्वदारसन्तोव्रत, (1323) स्वदारसंतोष, (1324) स्वक चरित्र भ्रष्ट, (1325) स्वक्षेत्रसंसार, (1326) स्वरसः, (1327) स्वरस्मृति, (1328) स्वरुपभ्रष्टतेज, (1329) स्वसमयपरसमयवक्तव्यता, (1330) स्वशरीरसंस्कार, (1331) ताम-रस, (1332) तामरस, (1333) तामरसे, (1334) तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यद्रष्टिवाद, (1335) तगरसमुग्गयं, (1336) तैजसशरीरसंघातनाम, (1337) तैरश्चिक, (1338) तरस, (1339) तरसालूआं, (1340) तरसवुं, (1341) तरसि, (1342) तत्रस्था, (1343) तत्त्वों का परस्पर संबंध, (1344) तीर्थकरसिद्ध, (1345) तीर्थकरसिद्धकेवलज्ञान, (1346) तीर्थंकरसिद्ध, (1347) तेजस् और वायु त्रस क्यों ?, (1348) तेरसया, (1349) तेरसि, (1350) थेरसंभूतविजय, (1351) थिरसत्त, (1352) थिरसीस, (1353) थिरसंघयण, (1354) तिक्त रस, (1355) तिरसीयउ, (1356) तिरषा, (1357) तिरस्कतिणी, (1358) त्रस, (1359) त्रस (त्रस जीव), (1360) त्रस और स्थावरों के भेदों का प्ररूपण, (1361) त्रस दशक, (1362) त्रस जीव, (1363) त्रस का निर्वचन, परिभाषा , (1364) त्रस काय, (1365) त्रस के चार प्रकार , (1366) त्रस के प्रकार , (1367) त्रस नाडी, (1368) त्रस नामकर्म, (1369) त्रस प्राणियों को बांधने ओर बन्धन मुक्त करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1370) त्रस-प्राण बीज रहित स्थंडिलभूमि, (1371) त्रस-स्थावर प्राणियों के व्यवच्छेद (विनाश) का अभाव, (1372) त्रसाडिया, (1373) त्रसई, (1374) त्रसजीव, (1375) त्रसकाय, (1376) त्रसकाय का स्वरुप , (1377) त्रसकाय के अनारम्भ की प्रतिज्ञा , (1378) त्रसकाय के भेद-प्रभेद , (1379) त्रसकाय प्रतिष्ठित आहार ग्रहण करने का निषेध , (1380) त्रसकायिकों की हिंसा का निषेध , (1381) त्रसको त्रोडियो, (1382) त्रसनाडी, (1383) त्रसनादि, (1384) त्रसनाली, (1385) त्रसनाम, (1386) त्रसरी, (1387) त्रसरेणु, (1388) त्रसरेणुः, (1389) त्रसरितन्तु :, (1390) त्रससेणु, (1391) त्रसस्थिति, (1392) त्रसित, (1393) त्रस्त, (1394) त्रस्तप, (1395) त्रीन्द्रिय त्रस के प्रकार , (1396) त्रिलोकाग्रशिखामणि, (1397) त्रिशिरस्, (1398) त्रिस्थानिक रस, (1399) तृतीय ईश्वरकारणिकवादी की श्रद्धा का निरसन , (1400) उच्चार प्रसवण भूमि प्रतिलेखना , (1401) उच्चार प्रस्रवण समिति, (1402) उच्चार, प्रश्रवण, अवकाश...कितने ? , (1403) उच्चार-प्रसवण भूमि के प्रतिलेखन न करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1404) उच्चार-प्रस्रवण भूमि के प्रतिलेखन का विधान , (1405) उच्चार-प्रस्त्रवणभूमि प्रतिलेखन , (1406) उच्चारप्रस्रवणसमिति, (1407) उदार त्रस के प्रकार , (1408) उदकपेढाल पुत्र का प्रति प्रश्न, (1409) उदकपेढाल पुत्र का श्रमणोपासक के प्रत्याख्यान के सम्बन्ध में प्रश्न, (1410) उदराग्निप्रशमन, (1411) उद्धारसागर, (1412) उद्धारसागरोपम, (1413) उद्धारसागरोवम, (1414) उद्धारसमय, (1415) उग्रसेन, (1416) उग्रसेन :, (1417) उग्रसेनतनय :, (1418) उग्रश्री, (1419) उक्किट्ठरस, (1420) उपेन्द्रसेन, (1421) उरसे, (1422) उरश्छद, (1423) उरस्सबल, (1424) उरस्सबलसमन्नागए, (1425) उरस्सबलसमण्णागए, (1426) उरस्सं, (1427) उरस्ताडं, (1428) उत्पातनिपातप्रसक्तसंकुचितप्रसारितरेक्करचितभ्रान्तसम्भ्रान्त :, (1429) उत्तरसाढा, (1430) उत्तरसाला, (1431) उत्तरसत्तासुओ, (1432) उत्तरश्रेणी, (1433) उवारस, (1434) वाद करने वालों की परस्पर (एक दूसरे की) निन्दा करते हो l गोशालक का आक्षेप, (1435) वाज करसुं, (1436) वाणारसी, (1437) वाणारसि, (1438) वानप्रस्थ, (1439) वानप्रस्थाश्रमः, (1440) वाणव्यन्तर देवों के उत्पाद आदि के 49 प्रश्नों का समाधान, (1441) वारसिआ, (1442) वातरशन, (1443) वातरशना, (1444) वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग, (1445) वैक्रियमिश्रशरीरकाययोग, (1446) वैक्रियिकशरीरसंघात, (1447) वैमानिक देवों के उत्पाद आदि के 49 प्रश्नों का समाधान, (1448) वैमानिकों के विमानों में प्रस्तट, (1449) वइरसामी, (1450) वइरसामि, (1451) वइरसामिउप्पत्ति, (1452) वइरसेण, (1453) वइरसेणा, (1454) वैरशृग्ङ, (1455) वइरसिंग, (1456) वइरसिट्ठ, (1457) वैरसृष्ट, (1458) वैरस्वामी, (1459) वैरस्वामिन्, (1460) वैश्रसिकः, (1461) वैस्रसिक बन्ध, (1462) वैस्रसिक बंध, (1463) वैस्रसिक शब्द, (1464) वैस्त्रसिक बन्ध, (1465) वैस्त्रसिक शब्द, (1466) वज्ज (त्रस्), (1467) वज्रसरीरु, (1468) वज्रसेन, (1469) वज्रसेना, (1470) वज्रशृग्ङ, (1471) वज्रशृङ्खला, (1472) वज्रसृष्ट, (1473) वज्रस्वामी, (1474) वज्रस्वामिन्, (1475) वज्त्रसेन, (1476) वज्त्रशाल, (1477) वज्त्रशीला, (1478) वज्त्रसंज्ञ, (1479) वज्त्रसूरि, (1480) वज्त्रसुन्दर, (1481) वक्रसमाचार, (1482) वन्दना के विशेष प्रसंग , (1483) वप्रश्री, (1484) वरदत्त अणगार ने निषढ के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा. और भ. अरिष्टनेमि ने पूर्वभव कहा, (1485) वरसाल, (1486) वरसालउ, (1487) वरसाळी, (1488) वरसाळो, (1489) वरसात, (1490) वरसधर, (1491) वरसरक, (1492) वरसत्ति, (1493) वरसवियारणि, (1494) वरसीधू, (1495) वरसीधु, (1496) वरसेन, (1497) वरसेना, (1498) वरसेणा, (1499) वरशात, (1500) वरशोध्य, (1501) वरशोंत, (1502) वरसिट्ठ, (1503) वरसिउ, (1504) वरसंति, (1505) वरसोलां, (1506) वरवइरसिंग, (1507) वर्ण-गंध-रस-स्पर्श के प्रकार , (1508) वर्षा बरसने पर एक स्थान में निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों के ठहरने की विधि , (1509) वर्षा बरसने पर पूर्व गृहीत भक्त-पान के उपयोग की विधि , (1510) वसति द्रष्टान्त , (1511) वसति-संस्तरशुद्धि, (1512) वस्त्रसीवनादि, (1513) वस्त्रसंकोचना दोष, (1514) ववहारसच्च, (1515) ववहारसच्चा, (1516) वीभत्स रस की उत्पत्ति और लक्षण , (1517) वीर रस की उत्पत्ति और लक्षण , (1518) वीरसैनिक, (1519) वीरसेण, (1520) वीरसेन, (1521) वीरसेणि, (1522) वीरसेणिय, (1523) वीरश्रेणिक, (1524) वीरशृग्ङ, (1525) वीरसिंग, (1526) वीरसिट्ठ, (1527) वीरसृष्ट, (1528) वीरस्तुति, (1529) वीरसुणिय, (1530) वीसरस्सर, (1531) वेरसेण, (1532) वेरस्स, (1533) विचित्रसूत्रता, (1534) विद्याधरश्रमण, (1535) विद्याधरश्रेणि, (1536) विगतरस,

(1537) विहरसि, (1538) विज्जाहरसेढि, (1539) विज्जाहरसेढोओ, (1540) विमानप्रस्तार, (1541) विमरसइ, (1542) विराधक वानप्रस्थ , (1543) विरस, (1544) विरसाहार, (1545) विरसमेह, (1546) विरसमुह, (1547) विरसिंग, (1548) विषयारसि, (1549) विश्रसा, (1550) विष्टरश्रवा, (1551) विस्रसा, (1552) विस्रसा बंध, (1553) विस्रसाकरण , (1554) विस्रसोपचय, (1555) विस्तारसम्यक्त्व, (1556) विस्त्रसा बन्ध, (1557) वित्रस्त, (1558) विविध वाद निरसन , (1559) वंणारशी, (1560) वोज्ज (त्रस्), (1561) व्रीडा रस की उत्पत्ति और लक्षण , (1562) वृष्यरसत्याग, (1563) वृष्येष्ट रस, (1564) वृष्येष्टरस, (1565) वृत्रसूदन, (1566) वुज्ज (त्रस्), (1567) व्याधि ग्रस्त दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (1568) व्याघ्रसिंह, (1569) व्यवहारसम्यग्दर्शन, (1570) व्यवहारसम्यग्दर्शनाराधना, (1571) व्यवहारसम्यग्ज्ञान, (1572) व्यवहारसम्यक्त्व, (1573) व्यवहारसत्य, (1574) व्युत्सर्ग का उदाहरण : प्रसन्नचन्द्र राजर्षि , (1575) यक्ष ने हरिकेशी की प्रशंसा की, (1576) यशोभद्रसूरि, (1577) यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत, (1578) युग्मप्रदेशं धनचतुररस्त्रं, (1579) युग्मप्रदेशं प्रतरचतुररस्त्रं, (1580) " संग्राम में मरने वाला देवता होता है " इस सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न, (1581) आभोगिनी, प्रश्न आदि विद्याएं , (1582) आचारश्रुताध्ययन, (1583) आदर्शप्रश्न, (1584) आहार की प्रशंसा और निन्दा का निषेध , (1585) आहारशरीर, (1586) आहारशरीरबन्धननाम, (1587) आहारशरीरनाम, (1588) आहारशरीरसंघातनाम, (1589) आहारशुद्धि, (1590) आकारशुद्धि, (1591) आलोचनाकाल में प्रशस्त-अप्रशस्त द्रव्य... , (1592) आम्रशालवन, (1593) आनन्द के प्रव्रज्या ग्रहण करने के सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न और भगवान का समाधान , (1594) आन्तरशब्दानुविद्धसमाधिः, (1595) आर्द्रकप्रश्न, (1596) आत्म प्रशंसा, (1597) आत्म सम द्रष्टि , (1598) आत्मप्रशंसा, (1599) अभियोगी भावना : प्रश्न, प्रश्नाप्रश्न आदि , (1600) अभ्यन्तरशम्बूका, (1601) अचेलत्व का प्रशस्त परिणाम , (1602) अधर्म प्रशंसाकरण प्रायश्चित्त , (1603) अग्निमित्रा का प्रश्न, (1604) अग्रशिर :, (1605) अग्रश्रुतस्कन्ध :, (1606) अकलेवरश्रेणि, (1607) अक्षर-अनक्षरश्रुत की पूर्वता , (1608) अक्षरश्रुत, (1609) अक्षरश्रुत के प्रकार , (1610) अक्षरश्रुत की परिभाषा , (1611) अक्षरश्रुतज्ञान, (1612) अक्षरश्रुतम्, (1613) अनाचारश्रुतम्, (1614) अणगार स्वरूप की प्रशंसा, (1615) अनगारश्रुत, (1616) अनक्षरश्रुत, (1617) अनशन के लिए अप्रशस्त-प्रशस्त स्थान , (1618) अनेक लोगों ने नन्द की प्रशंसा की और वह हर्षित हुआ , (1619) अंगारशकटिका, (1620) अङ्गुष्ठप्रश्न, (1621) अंजू के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न, (1622) अन्तरशौचम्, (1623) अनुभ्रष्ट, (1624) अन्यदृष्टिप्रशंसा, (1625) अन्यदृष्टिप्रशंसा अतिचार, (1626) अन्यतीर्थिक प्रशंसा, (1627) अन्यतीर्थिकों की प्रशंसा करने का प्रायश्चित्त सूत्र , (1628) अप्रशस्त, (1629) अप्रशस्त अवग्रह, (1630) अप्रशस्त भाषा 6, (1631) अप्रशस्त भावना : हिंसा आदि , (1632) अप्रशस्त भावशीति, (1633) अप्रशस्त भावसंयोग, (1634) अप्रशस्त ध्यान, (1635) अप्रशस्त नक्षत्र : संध्यागत आदि , (1636) अप्रशस्त निःसरणात्मक तैजस, (1637) अप्रशस्त निदान, (1638) अप्रशस्त प्रभावना, (1639) अप्रशस्त प्रवृत्ति, (1640) अप्रशस्त राग, (1641) अप्रशस्त शकुन , (1642) अप्रशस्त वात्सल्य, (1643) अप्रशस्त विहायोगति, (1644) अप्रशस्त-इच्छा, (1645) अप्रशस्त-नोआगम-भावोपक्रम, (1646) अप्रशस्त-प्रशस्त लेश्या , (1647) अप्रशस्त-प्रतिसेवना, (1648) अप्रशस्तबृंहण, (1649) अप्रशस्तध्यान, (1650) अप्रशस्तोपशामना, (1651) अप्रश्न विद्या, (1652) अश्ववरश्रुत, (1653) अष्टादशसहस्रशीलाङ्ग, (1654) औगारिकमिश्रशरीर कायप्रयोग, (1655) औगारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग, (1656) अविरतसम्यगद्रष्टि, (1657) बाहुप्रश्न, (1658) बाहुप्रश्न, (1659) बालमरण की प्रशंसा के प्रायश्चित्त सूत्र , (1660) बहुला का प्रश्न, (1661) भ. महावीर के समवसरण में गौतम का जन्मान्ध पुरुष के सम्बन्ध में प्रश्न, (1662) भ. महावीर के समवसरण में काली रानी का प्रश्न , (1663) भ. महावीर के समवसरण में शिव के विभंगज्ञान के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर, (1664) भ. महावीर ने देवता द्वारा की गई प्रशंसा का निरूपण किया, (1665) भ. महावीर ने एक आसन पर बैठे हुए चौपन प्रश्नों के समाधान कहे, (1666) भ. महावीर ने कुण्डकोलिक की प्रशंसा की, (1667) भ. महावीर ने मद्रुक की प्रशंसा की, (1668) भ. मल्ली के रूप की प्रशंसा, (1669) भ. मल्ली के रूप की प्रशंसा. शंख राजा के दूत का मिथिला में आगमन, (1670) भ. मल्ली के श्री दामगण्ड (पुष्पहार) की प्रशंसा, (1671) भ. मल्ली के स्नान की प्रशंसा, (1672) भास्करश्रवण, (1673) भास्वरशुक्लम्, (1674) भद्र का प्रश्न, (1675) भद्रा (राजकुमारी) ने उनको रोका और मुनि की प्रशंसा की, (1676) भद्रा ने मुनि की पुन : प्रशंसा की, (1677) भद्रशाल, (1678) भद्रशाल वन का प्रमाण, (1679) भद्रशाल वन के सिद्धायतन का प्रमाण, (1680) भद्रशाल वन में सोलह पुष्करिणियाँ , (1681) भद्रशालवन, (1682) भद्रशालवन में आठ दिशा हस्तिकूट, (1683) भगवान के कहने से गौशालक से प्रश्न किये, (1684) भगवान ने कामदेव की प्रशंसा की, (1685) भवनवासी देवों के उत्पाद आदि के 49 प्रश्नों का समाधान, (1686) भ्रष्ट, (1687) भ्रष्टतेजाः, (1688) भुरशी, (1689) चन्द्ररश्मि, (1690) चन्द्रशेखर, (1691) चन्द्रश्री, (1692) चन्द्रशृङ्ग, (1693) चतुरशरीरी जीव, (1694) चतुरशीति समर्जितादि विशिष्ट चौबीसदंडकों और सिद्धों का अल्पबहुत्व, (1695) चौबीसदंडकों और सिद्धों में चतुरशीति समर्जितादि का प्ररूपण, (1696) चित्रशाळी, (1697) चित्रशाली, (1698) चित्रषेणा, (1699) चोरशास्त्र, (1700) दरशवुं, (1701) दरशंन, (1702) देशविषय मिथ्यादृष्टिप्रशंसा, (1703) देव ने स्वाभाविक रूप धारण करके कामदेव की प्रशंसा की और क्षमायाचना की, (1704) देवानन्दा का यह रूप देखकर गौतमस्वामी ने प्रश्न किया और भ. महावीर ने समाधान किया, (1705) देवद्युति के प्रवेश के सम्बन्ध में प्रश्न और समाधान, (1706) देवताओं के मन से किये गये प्रश्नों का भ. महावीर ने मन से ही उत्तर दिया, (1707) धन्ना भार्या का प्रश्न, (1708) धूम्रशिखाचारण, (1709) दिवा - भोजन निन्दा और रात्रि - भोजन प्रशंशा के प्रायश्चित्त सूत्र , (1710) दूरश्रवणत्व, (1711) द्रष्ट, (1712) द्रष्टा, (1713) द्रष्टान्त, (1714) द्रष्टान्तो के दार्ष्टान्तिक की योजना , (1715) द्रष्टांतों द्वारा कषायों के स्वरूप का प्ररूपण, (1716) द्रष्टये पडचुं, (1717) द्रष्टि, (1718) द्रष्टि-अविष, (1719) द्रष्टिनिविष, (1720) द्रष्टच्यमुष्टय,

(1721) द्रश्यमान द्रव्य, (1722) द्रव्य द्रष्टि, (1723) एकाकी भिक्षु की अप्रशस्त विहार चर्या , (1724) एकाकी भिक्षु की प्रशस्त विहार चर्या , (1725) एकान्त - द्रष्टि निषेध , (1726) गम्भीरशासन, (1727) गौतम का प्रश्न. भगवान का उत्तर, (1728) गौतम के समीप प्रश्न के लिए प्राश्वापत्यश्रमण उदकपेढाल पुत्र का आना, (1729) गंगदत्त देव के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न, (1730) ग्रशामांहि, (1731) ह्रषीकेश, (1732) ह्रष्यका, (1733) ह्रष्यकान्ता, (1734) इन्द्रशर्मा, (1735) इन्द्रशर्मन्, (1736) इन्द्रश्री, (1737) जमाली और उसके शिष्यों का शय्या करने में - " कृत-कार्यमाण " के विषयों में प्रश्नोत्तर, (1738) जयन्ती के प्रश्न और समाधान., (1739) जीवविषया द्रशिक्रिया, (1740) जितशत्रु का प्रश्न, (1741) जितशत्रु ने पान-भोजन की प्रशंसा की, (1742) जितशत्रु ने उदगरत्न की प्रशंसा की, (1743) ज्योतीरश्मिचारण, (1744) ज्योतिरश्मि चारण, (1745) ज्योतिष्क देवों के उत्पाद आदि के 49 प्रश्नों का समाधान, (1746) काली रानी के प्रश्न के उत्तर में भगवान् ने कालीरानी के पुत्र कालकुमार का मरण कहा और कालीरानी स्वस्थान गई, (1747) कालोदाई के अचित्त पुदगलों के प्रकाश उद्योतादि संबंधी प्रश्नों का (भ. महावीर) ने समाधान किया, (1748) कालोदाई के अग्निकाय जलाने और बुझाने से होने वाले कर्मबन्ध संबन्धी प्रश्नों का भ. महावीर ने समाधान किया, (1749) कालोदाई के पापकर्म फलविपाक संबंधी और कल्याणकर्म (धर्म) फल विपाक संबंधी प्रश्नों का महावीर ने समाधान किया, (1750) कालोदायी के पंचास्तिकाय संबंधी-विविध प्रश्नों के ज्ञातपुत्र-भ. महावीर कृत समाधान, (1751) कल्याण कर्मो के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर, (1752) करशण, (1753) करशंणी, (1754) करशंपुट करी, (1755) कौणिक ने धर्मदेशना की प्रशंसा की और अपने भवन को गया, (1756) कोमलप्रश्न, (1757) कूणिक सहोदर वेहल्ल ने सेचनक गंध हस्ति-क्रीड़ा की प्रशंसा की , (1758) कूपदर्दुर का दृष्टान्त कहकर नारद ने द्रौपदी के रूप की प्रशंसा की, (1759) कूर्म द्रष्टान्त , (1760) कूटागारशाला के दृष्टांत द्वारा स्त्रियों के चतुभँगों का प्ररूपण, (1761) क्रश्न, (1762) क्षायिक सम्यग्द्रष्टि, (1763) क्षपकश्रेणि : अकलेवरश्रेणी , (1764) क्षत्रियमुनि के प्रश्न, (1765) क्षौमकप्रश्न, (1766) क्षयिकी द्रष्टि, (1767) कुबेरश्री, (1768) कुद्रष्टि, (1769) कुमारश्रमण, (1770) लौकिक द्रष्टि, (1771) लोक और जीव के विषय में गौतम के प्रश्न करने पर जमाली का चुप रहना, (1772) लोक, अलोक और अवकाशान्तर आदि में पूर्वापर कौन ? (रोहा अणगार के प्रश्न और समाधान), (1773) लोक-स्प्रष्ट, (1774) लोकोत्तरशब्दलिंगज श्रुतज्ञान, (1775) लोकोत्तरशुचित्व, (1776) महाप्रश्नविद्या, (1777) मनःप्रश्नविद्या, (1778) मन्दरशैल, (1779) मन्त्रशक्ति, (1780) मनुषोत्तरशैल, (1781) मरषा, (1782) मेधावी पुरुषों के प्रश्नों के भय से महावीर आरामगृह में नहीं ठहरता है l गोशालक का आक्षेप, (1783) मिथ्याद्रष्टिः, (1784) मिथ्यादृष्टिप्रशंसा, (1785) मित्रश्री, (1786) म्रश्रित, (1787) निर्ग्रन्थों के प्रशस्त लक्षण , (1788) पारशैल, (1789) पारशर, (1790) पारशरी, (1791) पारशी, (1792) पारशी-भेद, (1793) पारशीकर, (1794) पारश्ववर्ती, (1795) पाश्वस्थादि वन्दन - प्रशंसन प्रायश्चित्त , (1796) पर प्रशंसा, (1797) परदृष्टिप्रशंसा, (1798) परपाषण्डप्रशंसा, (1799) परप्रशंसा, (1800) परषद, (1801) परशरीरानवकांक्षाप्रत्यया क्रिया, (1802) परशरीरसंवेजनी कथा, (1803) परशीनि, (1804) परशेवी, (1805) परशुमुद्रा, (1806) परशुराम, (1807) परिभ्रष्ट :, (1808) पर्याय द्रष्टि, (1809) पथिको के सावद्य प्रश्नो के उत्तर देने का निषेध , (1810) फरशुराम, (1811) पिंगल निर्ग्रन्थ ने लोकादि के सम्बन्ध में प्रश्न किये, (1812) पूर्व शय्या उत्तरशय्या से बाधित , (1813) प्रदेश द्रष्टान्त , (1814) प्रकीर्णप्रश्न-प्रकीर्णविद्य , (1815) प्रमाण से मोक्ष की सिद्धि प्रश्न, (1816) प्रशान्त, (1817) प्रशान्तारि, (1818) प्रशान्तात्मा, (1819) प्रशान्तमदन, (1820) प्रशान्तरस, (1821) प्रशान्तरसशैलूष, (1822) प्रशान्ति, (1823) प्रशान्तिक्रिया, (1824) प्रशास्ता, (1825) प्रशास्तृदोष, (1826) प्रशम, (1827) प्रशमारक, (1828) प्रशमात्मा, (1829) प्रशस्त अवग्रह, (1830) प्रशस्त भाव : उच्च स्थानगत ग्रह , (1831) प्रशस्त भावना : आदि , (1832) प्रशस्त भावसंयोग, (1833) प्रशस्त भावयोग, (1834) प्रशस्त करनोपशामना, (1835) प्रशस्त मरण , (1836) प्रशस्त निदान, (1837) प्रशस्त निस्सरणतैजस, (1838) प्रशस्त नोआगमभावोपक्रम, (1839) प्रशस्त प्रवृत्ति, (1840) प्रशस्त राग, (1841) प्रशस्त स्थिरीकरण, (1842) प्रशस्त वात्सल्य, (1843) प्रशस्त विहायोगति, (1844) प्रशस्त-अप्रशस्त क्षेत्र , (1845) प्रशस्त-इच्छा, (1846) प्रशस्ता भावशीति, (1847) प्रशस्तध्यान, (1848) प्रशस्तवंक, (1849) प्रशस्तेन्द्रियप्रणिधि, (1850) प्रशस्ति, (1851) प्रशस्तोपबृंहण, (1852) प्रशस्य आचार्य : आगाढप्रज्ञ आदि , (1853) प्रश्न, (1854) प्रश्ण, (1855) प्रश्न करने की विधि , (1856) प्रश्न करवुं, (1857) प्रश्न कर्ता, अकर्ता , (1858) प्रश्न पूछने की विधि , (1859) प्रश्न व्याकरण, (1860) प्रश्नादि कहने का प्रायश्चित्त सूत्र , (1861) प्रश्नाप्रश्न, (1862) प्रश्नाप्रश्न चारित्रकुशील, (1863) प्रश्नकीर्ति, (1864) प्रश्नकुशल, (1865) प्रश्नप्रश्न : घण्टिकयक्ष , (1866) प्रश्नवाहन, (1867) प्रश्नवण, (1868) प्रश्नव्याकरण, (1869) प्रश्नव्याकरणदशाधर, (1870) प्रश्नेणि, (1871) प्रश्निका, (1872) प्रश्नोत्तरविधि, (1873) प्रशंस, (1874) प्रशंसा, (1875) प्रशंसाकृत परत्व अपरत्व, (1876) प्रश्रवाहनकुलाम्बुनिधिः, (1877) प्रश्नः, (1878) प्रश्नवाहनक, (1879) प्रश्नव्याकरण, (1880) प्रश्नव्याकरणदशा, (1881) प्रष्ठ, (1882) प्रष्ठक, (1883) प्रश्वास, (1884) प्रस्थक द्रष्टान्त , (1885) प्रतिप्रश्न, (1886) प्रतिप्रश्न का फल , (1887) पृथक्त्ववितर्कवीचारशुक्लध्यान, (1888) पुरश्चरणम्, (1889) राजप्रश्नीय, (1890) राजप्रश्नकृत, (1891) राजप्रश्नीय, (1892) रशी, (1893) रश्म, (1894) रश्मिकलाप, (1895) रश्मिवेग, (1896) रत्नप्रभापृथ्वी के असंख्यात विस्तृत नरकावासों में उत्पाद आदि के प्रश्नों का समाधान, (1897) रत्नप्रभापृथ्वी के संख्यात विस्तृत नरकावासों में नैरयिकों के संख्यात विषयक 49 प्रश्नों का समाधान, (1898) रत्नप्रभापृथ्वी के संख्यात विस्तृत नरकावासों में उद्वर्तन करने वाले नारकों के 39 प्रश्नों का समाधान, (1899) रत्नप्रभापृथ्वी के संख्यात विस्तृत नरकावासों में उत्पन्न होने वाले नारकों के 39 प्रश्नों का समाधान, (1900) रुचिरशिष्ट, (1901) रुचिरशृंग्ङ, (1902) ऋषिभद्रपुत्र सम्बन्धित गौतम का प्रश्न और भ. महावीर का उत्तर, (1903) सामान्यद्रष्ट, (1904) सद्दालपुत्र के सामने देवता ने भ. महावीर की प्रशंसा

की, (1905) सहस्त्ररश्मि, (1906) सहस्त्रशीर्ष, (1907) सम्यक् द्रष्टि, (1908) सम्यक्त्व पराक्रम के प्रश्नोत्तर , (1909) सरल और वक्र, सरल द्रष्टि और वक्र द्रष्टि आदि , (1910) सरशी, (1911) सर्वविषयमिथ्यादृष्टिप्रशंसन, (1912) सीरष, (1913) शक्र का पूर्व-भव के सम्बन्ध में प्रश्न, (1914) शक्रादि की गति के विषय में गौतम के प्रश्न और भगवान के समाधान, (1915) शरशति, (1916) शर्कराप्रभापृथ्वी से अध:सप्तम पृथ्वी-पर्यन्त नरक पृथ्वियों में उत्पाद आदि के प्रश्नों का समाधान, (1917) शीलरहित और शीलसहित श्रमणोपासक के प्रशस्त-अप्रशस्त , (1918) शिष्य के प्रश्न पर गुरु द्वारा उत्तर , (1919) श्रावक सम्यक द्रष्टि, (1920) श्रशना, (1921) श्रष्ट, (1922) श्रष्टी, (1923) श्रेणिक ने स्वप्न-प्रशंसा की , (1924) सिद्ध होने वाले के संहनन के सम्बन्ध में गौतम के प्रश्न, (1925) सिरशव, (1926) संद्रष्टि, (1927) सोमा की वंध्यत्व-प्रशंसा, (1928) सोमिल के यात्रादि प्रश्नों का भगवान ने समाधान किया, (1929) स्त्रष्टा, (1930) सुबाहुकुमार के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न, (1931) सुभद्रादि कौणिक की भार्याओं ने धर्मदेशना की प्रशंसा की और अपने निवास (अन्त :पुर) को गयी, (1932) सुदर्शन सेठ ने काल के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे, (1933) सुदर्शन सेठ ने पल्योपमादि के क्षय और अपचय आदि के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे, (1934) सुरश्रेष्ठ, (1935) सुवर्णकूलाद्वीप और रष्यकूलाद्वीप के प्रमाणादि , (1936) स्व-स्व-प्रवाद-प्रशंसा एवं सिद्धि लाभ का दावा , (1937) स्वच्छन्दाचारी की प्रशंसा एवं वंदना करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1938) स्वक चरित्र भ्रष्ट, (1939) स्वरुपभ्रष्टतेज, (1940) तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यद्रष्टिवाद, (1941) तैरश्चिक, (1942) तिरषा, (1943) त्रिलोकाग्रशिखामणि, (1944) उच्चार, प्रश्रवण, अवकाश...कितने ? , (1945) उदकपेढाल पुत्र का प्रति प्रश्न, (1946) उदकपेढाल पुत्र का श्रमणोपासक के प्रत्याख्यान के सम्बन्ध में प्रश्न, (1947) उदराग्निप्रशमन, (1948) उग्रश्री, (1949) उरश्छद, (1950) उत्तरश्रेणी, (1951) वाणव्यन्तर देवों के उत्पाद आदि के 49 प्रश्नों का समाधान, (1952) वातरशन, (1953) वातरशना, (1954) वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग, (1955) वैक्रियमिश्रशरीरकाययोग, (1956) वैमानिक देवों के उत्पाद आदि के 49 प्रश्नों का समाधान, (1957) वैरशृग्ङ, (1958) वज्रशृग्ङ, (1959) वज्रशृङ्खला, (1960) वज्त्रशाल, (1961) वज्त्रशीला, (1962) वप्रश्री, (1963) वरदत्त अणगार ने निषढ के पूर्वभव के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा. और भ. अरिष्टनेमि ने पूर्वभव कहा, (1964) वरशात, (1965) वरशोध्य, (1966) वरशोंत, (1967) वसति द्रष्टान्त , (1968) वसति-संस्तरशुद्धि, (1969) वीरश्रेणिक, (1970) वीरशृग्ङ, (1971) विद्याधरश्रमण, (1972) विद्याधरश्रेणि, (1973) विष्टरश्रवा, (1974) वंणारशी, (1975) यक्ष ने हरिकेशी की प्रशंसा की, (1976) यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत, (1977) आउरस्सरण, (1978) अणगारस्सभिक्खू, (1979) चमरस्स-अग्गमहिसी, (1980) ईसरस्स, (1981) खरस्सर, (1982) महुरस्सरा, (1983) निरस्साविणी, (1984) ओरस्स, (1985) ओरस्सबली, (1986) पच्छातुरस्स, (1987) परस्सलोभाविल, (1988) परस्सर, (1989) रस्सी, (1990) रस्सीमंडल, (1991) सारस्सय, (1992) समचउरस्स, (1993) सरस्सई, (1994) सरस्सर, (1995) सरस्सती, (1996) सूरस्सअग्गमहिसी, (1997) उरस्सबल, (1998) उरस्सबलसमन्नागए, (1999) उरस्सबलसमण्णागए, (2000) उरस्सं, (2001) वीसरस्सर, (2002) वेरस्स, (2003) आअच्छ (कृष्), (2004) आअंछ (कृष्), (2005) आभीरी का दृष्टांत , (2006) आचार्य : दीप का दृष्टांत , (2007) आचार्य सुलक्षण हो : सलक्षण कुमार दृष्टांत , (2008) आचार्यचिकित्साविधिज्ञ : संयोगदृष्टपाठी , (2009) आद पुरुष, (2010) आधाकर्मिक और स्त्रीप्रतिबद्ध शय्या : सापेक्ष दृष्टि , (2011) आदिपुरुष, (2012) आगाढ-परुष-वचन-निषेध , (2013) आगामी उत्सर्पिणी में श्रीकृष्ण का अमम भव में तीर्थंकर पद, (2014) आगमभावदृष्टिवाद, (2015) आगमद्रव्यदृष्टिवाद, (2016) आगमन की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2017) आज्ञाभंग का परिणाम : चन्द्रगुप्त-चाणक्य दृष्टांत , (2018) आहारक--उत्कृष्ट-जघन्य स्थिति , (2019) आहोपुरुषिका, (2020) आइंछ (कृष्), (2021) आकीर्ण और खलुंक अश्व के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2022) आखंच (आ+कृष्), (2023) आख्यायक की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2024) आकृष्टिविकृष्ट्वा, (2025) आकृष्टिविकृष्टि, (2026) आक्रुसिउ, (2027) आलभिका नगरी में ऋषिभद्रपुत्रादिक श्रमणोपासक, (2028) आलिह (स्पृश्), (2029) आलोचनार्ह का व्यवहार : व्याध और गौ दृष्टांत , (2030) आलुक्ख (स्पृश्), (2031) आलुंघ (स्पृश्), (2032) आलुंख (स्पृश्), (2033) आणच्छ (कृष्), (2034) आपात-संवास भद्र की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2035) आरोपणा छह मास की क्यों ? धान्यपटिक दृष्टांत , (2036) आरुसिय, (2037) आर्य-अनार्य की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2038) आर्यकृष्ण, (2039) आस्वाद की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2040) आठ दृष्टांत , (2041) आठ कर्मो के उत्कृष्ट स्थिति बंधको का प्ररूपण, (2042) आठ कृष्णराजियों के अवकाशान्तरों में लोकान्तिक विमान और देवों की प्ररूपणा, (2043) आत्म-पर के अंतकरादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2044) आत्मा की अदृश्यता के हेतु , (2045) आत्मांगुल और पुरुष की ऊंचाई , (2046) आत्मानुकंप-परानुकंप के भेद से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2047) आत्मंभर-परंभर की अपेक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2048) आवृष्ट, (2049) आयुष्य कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, (2050) अबद्धिकदृष्टि, (2051) अबहुश्रुत-अगीतार्थ आचार्य : सर्पशीर्ष दृष्टांत , (2052) अभिगृहीत दृष्टि-, (2053) अच्छ (कृष्), (2054) अदर्शन दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2055) अधर्म पक्ष में पुरुषों की प्रवृत्ति और परिणाम, (2056) अधर्मपक्षीय पुरुषों का परीक्षण, (2057) अदृष्ट, (2058) अदृष्ट स्थान में जाने का निषेध , (2059) अदृष्टायका, (2060) अदृष्टदोष, (2061) अग्नि का दृष्टांत , (2062) अग्निशिखा के दृष्टांत द्वारा स्त्रियों के चतुर्विधत्व का प्ररूपण, (2063) अजघन्य-अनुत्कृष्ट युक्त-असंख्येय , (2064) अजघन्य-अनुत्कृष्ट अनन्त-अनन्त , (2065) अजघन्य-अनुत्कृष्ट असंख्येय-असंख्येय , (2066) अजघन्य-अनुत्कृष्ट परीत-अनन्त , (2067) अजघन्य-अनुत्कृष्ट परीत-असंख्येय , (2068) अजघन्य-अनुत्कृष्ट युक्त-अनन्त , (2069) अजीवदृष्टिजा क्रिया, (2070) अजीवनैसृष्टिकी, (2071) अजीवनैसृष्टिकी क्रिया, (2072) अजीवस्पृष्टिजा क्रिया, (2073)

अकर्मभूमि के स्त्री-पुरुषों की भोगासक्ति, (2074) अक्खोड (कृष्), (2075) अक्रियावादी-कृष्णपक्षी , (2076) अकृष्ट पच्य, (2077) अक्षर-अनक्षर की दृष्टि से , (2078) अक्षरपृष्ठिका, (2079) अल्प महावृष्टि के हेतुओं का प्ररूपण, (2080) अल्प मृषावाद का प्रायश्चित्त सूत्र , (2081) अमायिसम्यग्दृष्टि, (2082) अमूददृष्टि, (2083) अमूढ़ दृष्टि, (2084) अमूढ दृष्टि, (2085) अमूढदृष्टि, (2086) अमृष्ट, (2087) अमृस्वर, (2088) अनादृष्ट, (2089) अनादृष्टि, (2090) अनावृष्णि, (2091) अनावृष्टि, (2092) अनभिगृहीता दृष्टि, (2093) अनन्तरावगाढ़ादि कृष्णलेश्यी एकेन्द्रिय जीवों के भेद-प्रभेदों का प्ररुपण, (2094) अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यी एकेन्द्रियों के भेद-प्रभेदों का प्ररूपण, (2095) अनन्तरोपपन्नकादि कृष्णलेश्यी भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के भेद-प्रभेदों का प्ररुपण, (2096) अनशन दुराराध्यं : राधावेध दृष्टांत , (2097) अंच (कृष्), (2098) अंछ (कृष्), (2099) अंछाव (कृष्), (2100) अंध और पंगु का दृष्टान्त , (2101) अन्धकवृष्णि, (2102) अंधकवृष्णि राजा का पुत्र गौतम कुमार, (2103) अन्धकवृष्णिदशा, (2104) अन्धकवृष्टि, (2105) अनिसृष्ट, (2106) अनिसृष्ट आहार ग्रहण करने का विधि-निषेध , (2107) अनिसृष्ट दोष , (2108) अनिसृष्टि, (2109) अंतर-बाह्य व्रण के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2110) अन्तराय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, (2111) अंतर्धानपिंड : क्षुल्लक-चाणक्य दृष्टांत , (2112) अनुदयबन्धोत्कृष्टा, (2113) अनुदयसंक्रमोत्कृष्ट, (2114) अनुदयसंक्रमोत्कृष्टा, (2115) अनुकृष्टि, (2116) अनुमान के प्रकार - सादृश्य आदि , (2117) अनुत्कृष्ट, (2118) अनुत्कृष्ट द्रव्यवेदना, (2119) अनुत्कृष्ट वेदना, (2120) अनुयोग की परिपाटी : कुंभजल दृष्टांत , (2121) अनुयोग की प्रवृत्ति : गौ दृष्टांत , (2122) अन्वयदृष्टान्त, (2123) अन्यदृष्टि, (2124) अन्यदृष्टि संस्तव, (2125) अन्यदृष्टिसंस्तव, (2126) अन्यदृष्टिसंस्तव अतिचार, (2127) अपरिकर्मित अयोग्य : शावक दृष्टांत , (2128) अपरिक्षणीय श्रीकृष्ण की पाण्डवों ने परीक्षा की , (2129) अपरिस्रावी : दृढ़मित्र दृष्टांत , (2130) अपौरुषेयत्वम्, (2131) अपोरुसियं, (2132) अप्रार्थित वैयावृत्त्य : महर्द्धिक दृष्टान्त , (2133) अपृष्टलाभिक, (2134) अपृष्टव्याकरण, (2135) अपुरुषाकारपराक्रम, (2136) अपुरुषेय, (2137) अर्धस्वर्गोत्कृष्ट, (2138) अर्हत् पार्श्व-अरिष्टनेमि-ऋषभ के अंतकृतभूमि , (2139) अर्हत् ऋषभ का तीर्थ-चतुष्टय --, (2140) अर्हत् ऋषभ की शिष्य सम्पदा , (2141) अर्हत् वचन से कल्याण : रोहिणेय दृष्टांत , (2142) अर्हत ऋषभ के कल्याणक नक्षत्र , (2143) अर्थ और मानकरण की अपेक्षा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2144) अर्थसंदृष्टि, (2145) असावद्य असत्यामृषा भाषा बोलना चाहिए , (2146) असद्भाववादक मृषावादी, (2147) असदृश अनुभाग, (2148) असदृशवेषग्रहण, (2149) असत्य-मृषा मनोयोग , (2150) असत्यामृषा भाषा, (2151) असत्यामृषा वचन, (2152) असत्यमृषा वचनयोग, (2153) अशकटपिता दृष्टांत , (2154) अशुक्लाकृष्णकर्म, (2155) अश्व के दृष्टांत द्वारा युक्तायुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2156) असंक्लेशकर आचार्य : प्रासाद दृष्टांत , (2157) असंसृष्ट, (2158) असंसृष्ट ग्रहणैषणा, (2159) असंयतसम्यग्दृष्टि, (2160) अस्पृशद्गति, (2161) अस्पृशद्गति, (2162) अस्पृष्टा, (2163) अस्पृश्य, (2164) अति आहार से हानि : कटाह दृष्टांत , (2165) अतिनिसृष्ट, (2166) अतिपुरुष :, (2167) अतिशयों की उपजीविता : आर्यसमुद्र-मंगु दृष्टांत , (2168) अट्टरुसग, (2169) अवआस (दृश्), (2170) अवबद्धक दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2171) अवडाह (उत्+क्रुश्), (2172) अवधिज्ञान का जघन्य क्षेत्र : पनक का दृष्टांत , (2173) अवज्झ (दृश्), (2174) अवक्ख (दृश्), (2175) अवयच्छ (दृश्), (2176) अवयज्झ (दृश्), (2177) अविचारितभाषी मृषावादी, (2178) अविकृष्ट क्षपक, (2179) अविकृष्ठ, (2180) अविरत सम्यग्दृष्टि , (2181) अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानक, (2182) अविरतसम्यग्दृष्टि, (2183) अविरतसम्यग्दृष्टि जीवस्थान, (2184) अव्यक्त मुनि : अक्षिप्रत्यारोपण दृष्टांत , (2185) अव्यवहर्त्तव्य : कुंभकार दृष्टांत , (2186) अयंछ (कृष्), (2187) अयोग्य से योग्य : अग्नि आदि दृष्टान्त , (2188) बाल दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2189) बद्धस्पर्शस्पृष्ट, (2190) बैठने की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2191) बन्धोत्कृष्ट, (2192) भ. अरिष्टनेमि तीर्थकर का आगमन और श्रीकृष्ण की पर्युपासना, (2193) भ. महावीर का आगमन-वृतान्त जानने के लिए श्रेणिक का कोटुम्बिक पुरुष को आदेश , (2194) भ. महावीर के तीर्थ में ऋषभदत्त और देवानन्दा का चरित्र, (2195) भ. महावीर के तीर्थ में शिवराज ऋषि, (2196) भ. महावीर की प्रवृत्ति के निवेदक पुरुष की कूणिक ने स्थायी नियुक्ति की, (2197) भ. महावीर ने ऋषभदत्त को प्रव्रज्या दी, (2198) भ. ऋषभदेव का अचेलकत्व और उपसर्ग-सहन, (2199) भ. ऋषभदेव का अनगार-स्वरूप, (2200) भ. ऋषभदेव का तीर्थ-प्रवर्तन, (2201) भ. ऋषभदेव का विहार, (2202) भ. ऋषभदेव के अणगारों का वर्णक, (2203) भ. ऋषभदेव के काल में होने वाले सिद्ध, (2204) भ. ऋषभदेव के प्रतिबन्ध का अभाव, (2205) भ. ऋषभदेव के संघयणादि, कुमारवासादि और निर्वाण, (2206) भ. ऋषभदेव की गणधरादि संपदा, (2207) भ. ऋषभदेव की प्रव्रज्या, (2208) भ. ऋषभदेव को केवलज्ञान, (2209) भ. ऋषभद्वारा लेखनादि कलाओं का उपदेश., (2210) भाषाजड्ड दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2211) भाषण की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2212) भाव पुरुष, (2213) भाव उपक्रम : गणिका आदि दृष्टांत , (2214) भावपुरुष, (2215) भद्रादि चार प्रकार के हाथियों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2216) भगवान की प्रवृत्ति के निवेदक पुरुष ने कोणिक के समक्ष भगवान के आगमन का निवेदन, (2217) भगवान की प्रवृत्ति के निवेदक पुरुष ने कूणिक के समक्ष चम्पा में आगमन का निवेदन किया, (2218) भक्ति-बहुमान ज्ञानाचार : मरुक-पुलिंद दृष्टांत , (2219) भरत चक्रवर्ती ने काकिणी रत्न से ऋषभकूट पर्वत के पूर्वी किनारे पर अपना नाम लिखा, (2220) भवनपति देव-देवियों की उत्कृष्ट-जघन्य स्थिति (कोष्टक), (2221) भवनपति निकाय में दक्षिणार्ध के इन्द्रों की उत्कृष्ट स्थिति, (2222) भवनपति निकाय में उत्तरार्ध के इन्द्रों की उत्कृष्ट स्थिति, (2223) भेद-विभाग की दृष्टि से , (2224) भेरी का दृष्टांत, (2225) भोगपुरुष, (2226) भोजकवृष्णि, (2227) भोजकवृष्टि, (2228) भोजन की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2229) भूमिराजिदृश क्रोध, (2230) भृष्ट, (2231) भृत्य दीक्षा के अयोग्य पुरुष,

(2232) बिना दोष प्रतिकमण क्यों ? वैद्यत्रयी दृष्टांत , (2233) बोलने की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2234) ब्राह्मण कुण्ड ग्राम में ऋषभदत्त ब्राह्मण, (2235) ब्रह्मचर्य तेजस्विता : यक्ष दृष्टांत , (2236) ब्रह्मचर्य का विध्न : दृष्टिराग , (2237) ब्रह्मसृष्ट, (2238) बृषाण, (2239) चालनी और तापसपात्र का दृष्टांत , (2240) चार - चार प्रकार के धार्मिक और अधार्मिक पुरुष , (2241) चार दृष्टियां , (2242) चार प्रकार के देवों में सम्यग्दृष्टियों आदि की उत्पत्ति का प्ररूपण, (2243) चारुकृष्ण, (2244) चारुषेण, (2245) चज्ज (दृश्), (2246) चलदृष्टि दोष, (2247) चन्द्र के पृष्ठ भाग पर गति करने वाले नौ नक्षत्र है, (2248) चन्द्रसृष्ट, (2249) चटाई के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2250) चतुर्थ पौरुषी समाचारी , (2251) चौबीसदंडकों में दृष्टान्तपूर्वक गति आदि की अपेक्षा उत्पत्ति का प्ररूपण , (2252) चौबीसदंडकों में दृष्टिजा आदि पाँच क्रियाएँ, (2253) चौबीसदंडकों में नैसृष्टिकी आदि पाँच क्रियाएँ, (2254) चौबीसदंडकों में सम्यग्दृष्टियों के आरंभिकी आदि क्रियाओं का प्ररूपण, (2255) छेदन की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2256) छेदत्पृष्ट, (2257) छिह (स्पृश), (2258) छिप्प (स्पृश), (2259) छिव (स्पृश), (2260) छोटी त्रुटि की उपेक्षा : सारणि आदि दृष्टांत , (2261) चिकित्सा की कालावधि : आचार्य, वृषभ... , (2262) चितिकर्म में क्षुल्लक का दृष्टान्त, (2263) चोखा परिव्राजिका कथित कूपमण्डूक का दृष्टान्त, (2264) चोल्लक अनिसृष्ट, (2265) चोरों का दृष्टांत , (2266) चुलनी पिता को देवता के कहे हुए अपनी माता को मारने के वचन श्रवण का उपसर्ग सहन न होने पर कोलाहल करना. और मायावी देव का आकाश में अदृश्य हो जाना, (2267) दारुसंकम, (2268) दास दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2269) दाव (दृश्), (2270) दच्छ (दृश्), (2271) दक्षिणार्ध - भरत के अनुपृष्ठ का आयाम, (2272) दण्डपारुष्य, (2273) दरिद्रता का निदान : रत्नविक्रय दृष्टांत , (2274) दर्शनावरणीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, (2275) दृष्टिसृष्टिः, (2276) दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2277) दीक्षा-अयोग्य पुरुष (प्रवचन सारोद्धार द्वार 107), (2278) दीन-अदीन परिणति आदि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2279) दीपक का दृष्टान्त , (2280) दीर्घपृष्ट :, (2281) दीर्घपृष्ठ, (2282) दीस (दृश्), (2283) देह (दृश्), (2284) देखने की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2285) देने की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2286) देशविप्रकृष्ट :, (2287) देव कथित रोगांतक सहन न होने पर सुरादेव का कोलाहल करना और मायावी देव का आकाश में अदृश्य हो जाना , (2288) देव ऋषि, (2289) देवकथित अपनी स्वर्ण-राशि को बिखरने रूप उपसर्ग सहन न होने पर चुल्लशतक का कोलाहल करना और मायावी देव का आकाश में अदृश्य हो जाना , (2290) देवियों के दृष्टांत , (2291) देवों द्वारा वृष्टि करने की विधि और कारणों का प्ररूपण, (2292) धर्म में पराक्रम के लिए एलक का दृष्टांत , (2293) धर्म में पराक्रम के लिए काकिणी और आम्र का दृष्टांत , (2294) धर्म में पराक्रम के लिए वणिक का दृष्टांत , (2295) धर्मास्तिकाय : परिणमन की सदृशता , (2296) धर्मपक्षीय पुरुष का वैशिस्ट्य, (2297) धर्मपक्षीय पुरुषों की प्रवृत्ति एवं परिणाम, (2298) धीर पुरुष धर्म को जानते है , (2299) धूलिदृष्टांत , (2300) धूमशिखा के दृष्टांत द्वारा स्त्रियों के चतुर्विधत्व का प्ररूपण, (2301) धृष्टार्जुन, (2302) धृष्टार्जुन :, (2303) धृष्टद्युम्न, (2304) धृतिदृष्टि, (2305) डिक्क (वृषकर्तुक गर्ज्), (2306) दिन और रात्रि की समान पौरुषी, (2307) दक्ख (दृश्), (2308) दंडफरुस, (2309) दो पौरुषी प्रत्याख्यान सूत्र, (2310) दो वसति क्यों ? वृषभ संस्थान, (2311) दूरापकृष्टि, (2312) दूत का श्रीकृष्ण के समीप आना, (2313) द्रौणिक पुरुष , (2314) द्रौपदी सहित पाण्डव और श्रीकृष्ण का आगमन, (2315) द्रव्य-भाव भावना : स्वरवेध आदि दृष्टांत , (2316) द्रव्यपुरुष, (2317) द्रव्यपुरुषवेद, (2318) दृष्ट, (2319) दृष्ट दोष, (2320) दृष्टादृष्टवन्दनक, (2321) दृष्टान्त, (2322) दृष्टांत : दुरूतक और द्रमक , (2323) दृष्टांत द्वारा आराधक-विराधक का स्वरूप , (2324) दृष्टांत से वेदत्रिक का स्वरूप, (2325) दृष्टांत--सूक्ष्म अध्व पल्योपम, (2326) दृष्टांत--सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम, (2327) दृष्टांत--सूक्ष्म उद्धार पल्योपम, (2328) दृष्टांत--व्यावहारिक अध्व पल्योपम, (2329) दृष्टांत--व्यावहारिक क्षेत्र पल्योपम, (2330) दृष्टांत--व्यावहारिक उद्धार पल्योपम, (2331) दृष्टान्ताभास, (2332) दृष्टान्तपरिणामक, (2333) दृष्टांतों से क्रोधादि कषाय का स्वरूप, (2334) दृष्टसाधर्म्यवत् अनुमान, (2335) दृष्टसाधर्म्यवत् अनुमान के प्रकार , (2336) दृष्टि, (2337) दृष्टि न खंचइ धार, (2338) दृष्टि पदारथ, (2339) दृष्टि रक्षा, (2340) दृष्टि त्रेडवी, (2341) दृष्टि-रक्षण, (2342) दृष्टिजा क्रिया, (2343) दृष्टिक्लीब दीक्षा अयोग्य नपुंसक, (2344) दृष्टिमोह, (2345) दृष्टिमृष्टि, (2346) दृष्टिपात, (2347) दृष्टिराग, (2348) दृष्टिसंमोह, (2349) दृष्टिवाद, (2350) दृष्टिवाद और ध्यान , (2351) दृष्टिवाद औरर छेदसूत्र : उत्तम श्रुत , (2352) दृष्टिवाद का निर्वचन, (2353) दृष्टिवाद का स्वरूप , (2354) दृष्टिवाद का उत्सारण क्यों ?, (2355) दृष्टिवाद के अनर्ह , (2356) दृष्टिवाद के पांच प्रस्थान , (2357) दृष्टिवाद के प्रकार , (2358) दृष्टिवाद की सूक्ष्मता , (2359) दृष्टिवाद में विद्यातिशय , (2360) दृष्टिवादभेद, (2361) दृष्टिवादसंज्ञा, (2362) दृष्टिवादोपदेश , (2363) दृष्टिवादोपदेश संज्ञा, (2364) दृष्टिवादोपदेशिकी, (2365) दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा, (2366) दृष्टिवेध, (2367) दृष्टिविपर्यासिका दण्ड, (2368) दृष्टिविषा, (2369) दृष्टिविषभावना, (2370) दृष्टियुद्ध, (2371) दुःप्रमृष्ट, (2372) दुर्वृष्टि, (2373) दुष्प्रमृष्ट, (2374) दुष्प्रमृष्टदोष, (2375) दुष्प्रमृष्टनिक्षेपाधिकरण, (2376) दुष्ट दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2377) दुष्ट पारांचिक : सर्षपनाल आदि दृष्टांत , (2378) द्वादशांग और श्रुतपुरुष , (2379) द्वादशांग की पौरुषेयता , (2380) द्वारिका में श्रीकृष्ण वासुदेव, (2381) द्विपृष्ठ, (2382) ईशानेन्द्र की कृष्णा आदि अग्रमहिषियों के कथानक, (2383) एक क्षेत्र में उत्कृष्ट वास, (2384) एकमूलक दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2385) एकवसति में जिनकल्पियों की उत्कृष्ट संख्या, (2386) एकोरुक द्वीप के पुरुषों के आकर-प्रकारादि का प्ररूपण, (2387) गज का दृष्टांत , (2388) गजसुकुमार के प्रति श्रीकृष्ण का राज्य ग्रहण प्रस्ताव., (2389) गमन की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2390) गण प्रमाण, पुरुष प्रमाण , (2391) गणधारक के आभाव्य पुरुषयुग , (2392) गौ का दृष्टांत , (2393) गौशालक का आनन्द स्थविर के समक्ष अर्थलुब्धवणिक का दृष्टांत

कहकर आक्रोश दिखाना, (2394) गीतार्थ-अगीतार्थ-चिकित्सा : गंत्री-नौका दृष्टांत , (2395) घातकी खण्ड के कपिल वासुदेव और भरत क्षेत्र के श्रीकृष्ण वासुदेव का शंख-शब्द से मिलना, (2396) घातकी खण्ड में उत्तम पुरुष, (2397) घट का दृष्टांत , (2398) ज्ञान और आचार भेद से पुरुषो के प्रकार , (2399) ज्ञानावरणीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, (2400) गोरसभावित क्षेत्र उत्कृष्ट क्यों ?, (2401) गोवृषमुद्रा, (2402) ग्रामवध का दृष्टांत , (2403) ग्रहों की उत्कृष्ट स्थिति, (2404) गृद्धपृष्ठ और वैहायसमरण, (2405) गृधपृष्ठ, (2406) गृद्रघ्रपृष्ठमरण, (2407) गृहस्थ का संसृष्ट आगार का विशेष स्वरूप, (2408) गुद्धपृष्ठमरण, (2409) गुणपुरुष, (2410) गुफासिंह और महिलाद्वय दृष्टांत , (2411) गुप्त ऋषि, (2412) गुरुनिह्मवी : परिव्राजक दृष्टांत , (2413) गुरुसम्बन्धी आशातना 33, (2414) गुरुस्थानाभ्युपगमक्रिया, (2415) हाथी का दृष्टांत , (2416) हाथी के दृष्टांत द्वारा युक्तायुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2417) हनन की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2418) हेमपुरुष, (2419) हेतु-फल के दृष्टि से , (2420) इहार्थ-परार्थ की अपेक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2421) इन्द्रिय-विभाग की दृष्टि से , (2422) जारेकृष्ण, (2423) जाति आदि के वृषभ के दृष्टांत द्वारा युक्त-अयुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2424) जाति-कुल-बल-रूप और जय संपन्न अश्व के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2425) जाति-कुल-बल-रूप-श्रुत और शील की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2426) जातिजुङ्गित दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2427) जड्ड दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2428) जड्डुअनिसृष्ट, (2429) जधन्य और उत्कृष्ट पौरुषी, (2430) जधन्य-उत्कृष्ट आराधना , (2431) जघन्य-मध्यम-उत्कृष्ट वर्षाक्षेत्र , (2432) जज्ञ-पुरुष, (2433) जैन शास्त्र और वैज्ञानिकों की दृष्टि से पृथ्वी संबंधी भेद (कोष्टक), (2434) जलमूक दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2435) जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्रों में उत्तम पुरुष, (2436) जम्बूद्वीप के तीर्थकरों की उत्कृष्ट संख्या, (2437) जम्बूद्वीप में ऋषभकूट पर्वत, (2438) जय की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2439) जीवदृष्टिजा क्रिया, (2440) जीवनैसृष्टिकी, (2441) जीवनैसृष्टिकी क्रिया, (2442) जीवस्पृष्टिजा क्रिया, (2443) जीवों की उत्कृष्ट कायस्थिति (कोष्टक), (2444) जीवों में कायिकी आदि क्रियाओं के स्पृष्टास्पृष्टभाव का प्ररूपण, (2445) झंझपुरुष, (2446) जिन : घृतकुट दृष्टांत , (2447) जिस आत्मा का दर्शनमोहत्रिक क्षय हो चुका है वह सम्यग्दृष्टि है यै असम्यग्दृष्टि ?, (2448) जंबूखावक का दृष्टांत , (2449) जंबुद्वीप की जगती का ऊपरी दृश्य (चित्र), (2450) जो (दृश्), (2451) जोव (दृश्), (2452) जोय (दृश्), (2453) जुंङ्गित दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2454) ज्योतिष्क देवों की उत्कृष्ट स्थिति, (2455) काल की दृष्टि से , (2456) कालपुरुष, (2457) कालविप्रकृष्ट, (2458) कालिकश्रुत और दृष्टिवाद की रचनाशैली , (2459) कामदृष्टि, (2460) कारण-कार्य की दृष्टि से , (2461) कायगुप्त मुनि दृष्टांत , (2462) कायगुप्ति : कूर्म दृष्टांत , (2463) कच्चे पक्के फल के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2464) कड्ढ (कृष्), (2465) कलह-उपेक्षा से सर्वनाश : गिरगिट हाथी दृष्टांत , (2466) कणेरुसेना, (2467) कणेरुसेणा, (2468) करणजड्ड दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2469) कर्मबंध में मोदक का दृष्टांत, (2470) कर्मजुङ्गित दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2471) कर्मपुरुष, (2472) कषाय और दृष्टांत , (2473) कषाय से चारित्रनाश : कनकरस दृष्टांत , (2474) कषायदुष्ट दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2475) कषायो को कृश करने का पराक्रम , (2476) कथापुरुष, (2477) केशिकुमार निर्दिष्ट " जीव की अदृश्यता ", (2478) केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में - " काष्ठगत अग्नि के दृष्टान्त से जीव का अदर्शन ", (2479) केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में - " लोह (धातु) धारक का दृष्टान्त पश्चात्ताप के निषेध का प्ररूपण, (2480) केवलान्वयी दृष्टान्त, (2481) खंच (कृष्), (2482) खंड कृष्टि, (2483) किम्पुरुष, (2484) किं पुरुष, (2485) किंपुरुष, (2486) किस गति से निकले हुए जीव एक समय में उत्कृष्टः कितने सिद्ध होते है ?, (2487) कंचुकी पुरुष द्वारा निवेदन, (2488) कोद्रव का दृष्टांत , (2489) कूर्म का दृष्टान्त , (2490) कूटागार के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2491) कोरक के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2492) क्रमसृष्टिः, (2493) क्रियादृष्टि, (2494) क्रोध : मरुक दृष्टांत , (2495) कृश और दृढ़ की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2496) कृषक का उदाहरण , (2497) कृशतणुं, (2498) कृषि, (2499) कृशि-कटी, (2500) कृषिकर्म, (2501) कृषिकर्मार्य, (2502) कृषिपाराशर, (2503) कृष्ण, (2504) कृष्ण लेश्या, (2505) कृष्ण लेश्या के परिणाम , (2506) कृष्ण वर्ण, (2507) कृष्ण-भगां, (2508) कृष्ण-नील-कापोतलेश्यी अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के भेद-प्रभेदों का प्ररूपण, (2509) कृष्ण-नील-कापोतलेश्यी पृथ्वी-अप्-वनस्पति-कायिकों में अन्त :क्रिया का प्ररूपण, (2510) कृष्ण-शुक्लपाक्षिक की अपेक्षा, (2511) कृष्णा, (2512) कृष्णा का महासिंहनिष्क्रुडित तप और सिद्धगति, (2513) कृष्णाभ, (2514) कृष्णाचार्य, (2515) कृष्णादि भावी तीर्थकर चातुर्यामधर्म के उपदेशक होंगे, (2516) कृष्णादि लेश्या विशिष्ट चौबीसदंडकों में समाहारादि सात द्वार, (2517) कृष्णागर, (2518) कृष्णागुरु, (2519) कृष्णावतंसक, (2520) कृष्णगिरि, (2521) कृष्णगुलिका, (2522) कृष्णकर्म, (2523) कृष्णलेश्या, (2524) कृष्णलेश्या (द्रव्य), (2525) कृष्णलेश्यारस, (2526) कृष्णलेश्यी भवसिद्धिक एकेन्द्रिय जीवों के भेद-प्रभेदों का प्ररुपण, (2527) कृष्णलेश्यी एकेन्द्रियों के भेद-प्रभेदों का प्ररूपण, (2528) कृष्णपाक्षिक, (2529) कृष्णपक्ष, (2530) कृष्णपरिव्राजक, (2531) कृष्णराज, (2532) कृष्णराजी, (2533) कृष्णराजि, (2534) कृष्णराजि-तमस्काय , (2535) कृष्णराजियों देवकृत मेघ आदि का अस्तित्व, (2536) कृष्णराजियों के आयाम-विष्कम्भ का प्ररूपण, (2537) कृष्णराजियों के नाम, (2538) कृष्णराजियों के परिणामत्व का प्ररूपण, (2539) कृष्णराजियों के वर्ण का प्ररूपण, (2540) कृष्णराजियों की संख्या और स्थानों का प्ररूपण, (2541) कृष्णराजियों में " गृह " आदि के अभाव का प्ररूपण, (2542) कृष्णराजियों में अप्कायिकों के अभाव का प्ररूपण, (2543) कृष्णराजियों में चन्द्र आदि के अभाव का प्ररूपण, (2544) कृष्णराजियों में सभी प्राणियों की पूर्वोत्पत्ति का प्ररूपण, (2545) कृष्णसह, (2546) कृष्णसर्प, (2547) कृष्णश्री, (2548) कृष्णतृण - मणियों का इष्टतर कृष्णवर्ण, (2549) कृष्णवासुदेव, (2550) कृष्णवर्णनाम, (2551) कृष्णवेणा,

(2552) कृष्णवेन्ना, (2553) कृष्ट, (2554) कृष्ट, (2555) कृष्टयुत्तरावतंसक, (2556) कृष्टि, (2557) कृष्टिघोष, (2558) कृष्टिध्वज, (2559) कृष्टिकावर्त, (2560) कृष्टिकरण, (2561) कृष्टिकरणाद्धा, (2562) कृष्टिलेश्य, (2563) कृष्टिप्रभ, (2564) कृष्टिशिष्ट, (2565) कृष्टिशृङ्ग, (2566) कृष्टिवर्ण, (2567) कृष्टिवेदगद्धा, (2568) कृष्टियुक्त, (2569) कृति कर्म में कृष्ण और वीरक शालवी का दृष्टान्त, (2570) क्षेत्र-प्रवेश-विधि : पौरुषी निषेध , (2571) क्षेत्रपुरुष, (2572) कुदृष्टि, (2573) लक्षण की दृष्टि से , (2574) लवणादि समुद्रों में वृष्टि और बाह्य समुद्रों में अनावृष्टि, (2575) लेप के प्रकार : उत्कृष्ट-मध्यम-जघन्य , (2576) लेश्याओं की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति, (2577) लेटकर ली जाने वाली आतापना उत्कृष्ट , (2578) लिंगधारक श्रेणिबाह्य : शर्कराघट दृष्टांत , (2579) लोभ : आर्य मंगु दृष्टांत , (2580) लोकसृष्ट, (2581) लोकोत्तर विनय बलवान् : गंगा दृष्टांत , (2582) माकंदी-पुत्रों का शैलक यक्ष के पृष्ठ पर आरोहण करना, (2583) मान : अत्वंकारी भट्टा दृष्टांत , (2584) मान-उन्मान-प्रमाण पुरुष , (2585) मारते हुए पुरुष के वैर स्पर्शन का प्ररूपण, (2586) मार्ग के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुर्भंगों का प्ररूपण, (2587) मार्गज्ञ, नर्तकी और तैराक का दृष्टान्त , (2588) मार्जारी और जाहक का दृष्टांत , (2589) मातापितृसमान, (2590) मातृस्थानतः, (2591) मातृस्थानं, (2592) माया : पांडुरा आर्या दृष्टांत , (2593) मायामृषा, (2594) मायामृषा पाप, (2595) मायामृषा पापस्थान, (2596) मायामृषावाद, (2597) मायिमिथ्यादृष्टि, (2598) मधु-विष कुंभ के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुर्भंगों का प्ररूपण, (2599) मधुसिक्थादि गोलों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुर्भंगों का प्ररूपण, (2600) महाज्वर का दृष्टांत , (2601) महाकृष्ण, (2602) महाकृष्णा, (2603) महाकृष्णा की लघु सर्वतोभद्रप्रतिमा और सिद्धगति, (2604) महापुरुष, (2605) महापुरुषाः, (2606) महापुरुषदत्ता, (2607) महासेनकृष्ण, (2608) महासेनकृष्णा, (2609) महासेनकृष्णा का आयम्बिल वर्धमान तप. और सिद्धगति, (2610) महऋषि, (2611) महत्तर (नियुक्त कोटुम्बिक) पुरुषों ने श्रेणिक के समक्ष भगवान् के आगमन का निवेदन किया, (2612) महिष और मेष का दृष्टांत , (2613) मल्लक का दृष्टांत , (2614) मन्मनमूक दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2615) मनोगुप्ति : श्रेष्ठिपुत्र मुनि दृष्टांत , (2616) मनुष्य भव की दुर्लभता : दस दृष्टांत , (2617) मरह (मृष्), (2618) मरुद्वृषभकल्पा, (2619) मशक और जलौका का दृष्टांत , (2620) मेघ के दृष्टांत द्वारा माता-पिता के चतुर्भंगों का प्ररूपण, (2621) मेघ के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुर्भंगों का प्ररूपण, (2622) मेघ के दृष्टांत द्वारा राजा के चतुर्भंगों का प्ररूपण, (2623) मेरुषेणा, (2624) मेयभक्तऋषि, (2625) मिशदृष्टि, (2626) मिथ्या दृष्टि, (2627) मिथ्यादृष्टि, (2628) मिथ्यादृष्टि चौबीसदंडकों में आरंभिकी आदि क्रियाओं का प्ररूपण, (2629) मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, (2630) मिथ्यादृष्टि का ज्ञान अज्ञान स्वरूप, (2631) मिथ्यादृष्टि-सम्यग्दृष्टि की श्रद्धा में अन्तर , (2632) मिथ्यादृष्टिसेवा, (2633) मिथ्यादृष्टिसंस्तव, (2634) मिथ्याज्ञादृष्टि, (2635) मिथ्यात्वपराप्ति का हेतु और दृष्टांत , (2636) मिथ्यदृष्टि, (2637) मित्र-अमित्र के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुर्भंगों का प्ररूपण, (2638) मंगल का प्रयोजन : नृप आदि दृष्टांत , (2639) मोहक्षय : तल, सेनापति आदि दृष्टांत , (2640) मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, (2641) मूढ़ दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2642) मूक-अमुख की दृष्टि से , (2643) मूल कर्मप्रकृतियों की जधन्योत्कृष्ट बंध स्थिति आदि का प्ररूपण, (2644) मूढ़दृष्टि, (2645) मृषा, (2646) मृषा आदि भाषाओं का निषेध , (2647) मृषा उपदेश, (2648) मृषा विरति, (2649) मृषाभाषा, (2650) मृषाभाषा के प्रकार , (2651) मृषाक्रिया, (2652) मृषामनयोग, (2653) मृषानन्द, (2654) मृषानन्दरौद्रध्यान, (2655) मृषानंदी रौद्रध्यान, (2656) मृषानुबन्धी, (2657) मृषाप्रत्यय, (2658) मृषारौद्रध्यान, (2659) मृषावाद, (2660) मृषावाद - विरमण या सत्य महाव्रत की पाँच भावना , (2661) मृषावाद आश्रव, (2662) मृषावाद का फल, (2663) मृषावाद का स्वरूप, (2664) मृषावाद के छह कारण , (2665) मृषावाद के पर्यायवाची नाम, (2666) मृषावाद पाप, (2667) मृषावाद पापस्थान, (2668) मृषावाद वर्णन का उपसंहार, (2669) मृषावाद विरमण महाव्रत की पाँच भावना , (2670) मृषावादविंरमण, (2671) मृषावादविरमण, (2672) मृषावादविरमण व्रत, (2673) मृषावादी, (2674) मृषावाक्, (2675) मृषावचन, (2676) मृषोपदेश, (2677) मृष्टा, (2678) मृष्टान्नार्थो, (2679) मुद्गशैल और घन का दृष्टांत , (2680) मुक्त-अमुक्त के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुर्भंगों का प्ररूपण, (2681) नालीधमक दृष्टांत , (2682) नाम गोत्र कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, (2683) नामपुरुष, (2684) नारकों के आयुष्य की उत्कृष्ट स्थिति, (2685) नैपुणिक पुरुषों के प्रकार, (2686) नैसृष्टिकी क्रिया, (2687) नक्षत्रों की उत्कृष्ट स्थिति, (2688) नन्दसृष्ट, (2689) नपुंसक दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2690) नरक में तृषा वेदना, (2691) नरवृषभ, (2692) नरवृष्टि, (2693) नौ ग्रैवेयक, विजयादि चार और सर्वार्थसिद्ध विमान की उत्कृष्ट स्थिति, (2694) नय : विभिन्न वृष्टांत , (2695) नि :सृष्टार्थ, (2696) निअ (दृश्), (2697) णिअ (दृश्), (2698) निअच्छ (दृश्), (2699) णिअच्छ (दृश्), (2700) णिअड्ढ (नि + कृष्), (2701) णिअक्क (दृश्), (2702) णिहा (दृश्), (2703) निक्षेप दृष्टि, (2704) निरपेक्ष राजा की मृत्यु : मूलदेव दृष्टांत , (2705) निरवशेष असंसृष्ट ग्रहणैषणा, (2706) निर्ग्रन्थी का पुरुषत्व के लिए निदान करना , (2707) निरंतर प्रतिसेवी और कृतिकर्म : दृष्टांत , (2708) निषद्या की अनिवार्यता : राजा-नापित दृष्टांत , (2709) निशीथविस्मृति के हेतु : वैद्य दृष्टांत , (2710) निषिद्ध के हेतु : स्कन्दक दृष्टांत , (2711) निष्कृष्ट-अनिष्कृष्ट के भेद से पुरुषों के चतुर्भंगों का प्ररूपण, (2712) निसृष्ट, (2713) निसृष्टार्थ, (2714) निसृष्टः, (2715) नोआगमभावदृष्टिवाद, (2716) नोआगमभावी दृष्टिवाद, (2717) नृशंसत्व, (2718) न्यूनाधिक प्रायश्चित्त : रत्नवणिक् दृष्टांत , (2719) ओअक्ख (दृश्), (2720) ऊसुरुसुंभ, (2721) ऊसुरुसुंभिअ, (2722) पाँच उत्कृष्ट , (2723) पादोनपौरुषी-छायाप्रमाण , (2724) पादोनपौरुषो, (2725) पालक और शाम्ब का दृष्टान्त, (2726) पाण्डव सहित श्रीकृष्ण का द्रौपदी को लाने के लिये घातकी खण्ड की ओर प्रयाण, (2727) पांडुक वन का ऊपरी दृश्य (चित्र), (2728) पाप का परामर्श देने वाले मृषावादी, (2729) पारंचिक की जिनकल्पी सदृश चर्या , (2730) पात्रलेप क्यों ? सती का दृष्टांत , (2731) पदार्थ : आध्यात्मिक दृष्टिकोण , (2732) पदेक्ख (प्र + दृश्),

(2733) पद्मनाभ का श्रीकृष्ण का शरण स्वीकार करना, (2734) पद्मनाभ के समीप श्रीकृष्ण ने दूत भेजा, (2735) पहले उपस्थापना किसकी ? दण्डिक दृष्टांत , (2736) पक्षी के दृष्टांत द्वारा स्वर और रूप की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2737) पक्ष्मसृष्ट, (2738) पण्डुराजा ने कुन्ती को श्रीकृष्ण के पास भेजा और द्रौपदी अन्वेषण के लिए कहा, (2739) पराजय की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2740) परधनापहारक मृषावादी, (2741) परमपुरुष, (2742) परम्परादृष्टान्त, (2743) परम्परोपपन्नक कृष्णलेश्यी एकेन्द्रियों के भेद-प्रभेदों का प्ररूपण, (2744) परतुलना (शिष्य-परीक्षा) स्नुषा दृष्टांत , (2745) परिभोगैषणा-विवेक : आर्य मांगू-समुद्र दृष्टांत , (2746) परिज्ञात-अपरिज्ञात की अपेक्षा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2747) परिग्रह के निकृष्टता , (2748) परिनिय (परि + दृश्), (2749) परिपूणक और हंस का दृष्टांत , (2750) परिवादादिदोषत्रयास्पृष्ट, (2751) परोक्षदृष्टि, (2752) परुष, (2753) परुषदोष, (2754) पर्वतराजिसदृश क्रोध, (2755) पर्युषणाकाल : जघन्य-उत्कृष्ट ज्येष्ठावग्रह , (2756) पत्र के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2757) पत्तों आदि से युक्त वृक्ष के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2758) पौरुष, (2759) पौरुषघ्नी, (2760) पौरुषी, (2761) पौरुषी का अर्थ, (2762) पौरुषी का कालमान , (2763) पौरुषी का प्रमाणकाल , (2764) पौरुषी पच्चक्खाण, (2765) पौरुषी प्रत्याख्यान सूत्र, (2766) पौरुषी विज्ञान , (2767) पौरुषी-छाया का निष्पादन, (2768) पौरुषी-छाया का निवर्तन, (2769) पौरुषी-छाया का प्रमाण, (2770) पौरुषी-छाया उत्पत्ति, (2771) पौरुषीमण्डल, (2772) पौरुषेय, (2773) पौरुषेयत्वम्, (2774) पौरुषोमण्डल , (2775) पवित्र-अपवित्र मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2776) पवित्र-अपवित्र वस्त्रों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2777) पयापान दृष्टांत , (2778) पेच्छ (दृश्), (2779) पीने की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2780) फास (स्पृश्), (2781) फरिस (स्पृश्), (2782) फरुस, (2783) फरुसा, (2784) फरुसासी, (2785) फरुसग, (2786) फरुससाला, (2787) फरुसवयण, (2788) फरुसय, (2789) फंस (स्पृश्), (2790) पितृसेनकृष्ण, (2791) पितृसेनकृष्णा, (2792) पितृसेनकृष्णा का मुक्तावली तप और सिद्धगति, (2793) पंचरत्नवृष्टि, (2794) पंजर शब्द के अर्थ : शकुनि दृष्टांत , (2795) पूजा कर्म पर दो राजसेवकों का दृष्टान्त, (2796) पूज्य पुरुषों के आहार के ग्रहण करने की विधि-निषेध , (2797) पूर्ण-तुच्छ कुंभ के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2798) पूर्व पुरुषों के दृष्टांत से संयम शिथिल मुनि , (2799) पूर्वधर : दृष्टि और श्रुत , (2800) पूर्वधर : नालिका दृष्टांत , (2801) पोरुस, (2802) पोरुसा, (2803) पोरुसादा, (2804) पोरुसी, (2805) पोरुष, (2806) पोरुषी, (2807) पोरुसं, (2808) प्रामृष्य, (2809) प्राप्ति-अप्राप्ति की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (2810) प्रासारिकपुरुष, (2811) प्रातराश और सूत्रपौरुषी , (2812) प्रायश्चित्त में नानात्व और विशोधि : घट-पट दृष्टांत , (2813) प्रायोपगमन अनशन : पादप-मेरु दृष्टांत , (2814) प्रभावक पुरुष, (2815) प्रदेश का दृष्टान्त , (2816) प्रदेशी राजा का गृहस्थ धर्म स्वीकार करना और रमणीय-अरमणीय होने के सम्बन्ध में वन खण्ड आदि के दृष्टान्त., (2817) प्रजननपुरुष, (2818) प्रकृष्ट, (2819) प्रमृशा, (2820) प्रस्थक का दृष्टान्त , (2821) प्रस्थक, वसति और प्रदेश का दृष्टान्त , (2822) प्रथम पौरुषी की समाचारी , (2823) प्रतिबद्ध शय्या-निषेध : पूपलिकाखाद दृष्टांत , (2824) प्रतिमाधारी को स्त्री-पुरुष का उपसर्ग , (2825) प्रतिरूप विनय : श्वेत काक आदि दृष्टांत , (2826) प्रतिवृषभग्राम :, (2827) प्रवचन आदि का विच्छेद : घंटाश्रृंगाल दृष्टांत , (2828) प्रव्रज्या को कृषि की उपमा , (2829) प्रयोजनवश वैहायस-गृध्रपृष्ठमरण सम्मत , (2830) प्रीति और अप्रीति की विवक्षा से पुरुषों के चतुर्विधत्व का प्ररूपण, (2831) पृष्ठ, (2832) पृष्ठचंपा, (2833) पृष्ठमांसकत्व, (2834) पृष्ठत : अन्तगत अवधि, (2835) पृष्ठतः अंतगत , (2836) पृष्ठतः अन्तगत अलधिज्ञान, (2837) पृष्ठवंश, (2838) पृष्ठिमातृक, (2839) पृथिवीराजिसदृश क्रोध, (2840) पृथ्वी आदि की दृश्यता , (2841) पुल (दृश्), (2842) पुलअ (दृश्), (2843) पुलोअ (दृश्), (2844) पुम्म (दृश्), (2845) पुणअ (दृश्), (2846) पुण्यबंध से मुक्ति कैसे ? धान्यपल्य दृष्टांत , (2847) पुराणपुरुष, (2848) पुराणपुरुषोत्तम, (2849) पुरुस, (2850) पुरुसादाणिज्ज, (2851) पुरुसलउ, (2852) पुरुसवेय, (2853) पुरुष, (2854) पुरुष आपात स्थंडिलभूमि, (2855) पुरुष अश्व हस्ति आदि कों मारते हुए अन्य जीवों के भी हनन का प्ररूपण, (2856) पुरुष ज्येषेठ धर्म कल्प, (2857) पुरुष को मारने वाले की क्रियाओं का प्ररूपण, (2858) पुरुष पुण्डरीक, (2859) पुरुषा, (2860) पुरुषादानीय, (2861) पुरुषादानीय पार्श्व के कल्याणक नक्षत्र , (2862) पुरुषादानिय, (2863) पुरुषाद्वैत, (2864) पुरुषाक्रम, (2865) पुरुषान्तकरभूमि, (2866) पुरुषान्तरकृत, (2867) पुरुषांतरकृत परिकर्मित शय्या कल्पनीय , (2868) पुरुषार्थ, (2869) पुरुषार्थः, (2870) पुरुषार्थसिद्धयुपाय, (2871) पुरुषभेद से प्रायश्चित्त में भेद , (2872) पुरुषच्छाया, (2873) पुरुषज्ञान, (2874) पुरुषः, (2875) पुरुषकार, (2876) पुरुषक्लीव दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2877) पुरुषलिंग, (2878) पुरुषलिंग सिद्ध, (2879) पुरुषलिंगसिद्ध, (2880) पुरुषलिङ्गसिद्धकेवलज्ञान, (2881) पुरुषपण, (2882) पुरुषपुण्डरीक, (2883) पुरुषपुर, (2884) पुरुषरयण, (2885) पुरुषर्षभ, (2886) पुरुषसेन, (2887) पुरुषसिंह, (2888) पुरुषवेद, (2889) पुरुषवेद में श्रेणि आरम्भ करनें वाले की प्रक्रिया, (2890) पुरुषवेदोत्कृष्टप्रदेशसत्कर्मस्वामी, (2891) पुरुषविद्या, (2892) पुरुषविज्ञान, (2893) पुरुषविलय :, (2894) पुरुषवृक्षभा, (2895) पुरुषयुग, (2896) पुरुषों का अल्पबहुत्व, (2897) पुरुषों के चार प्रकारों का प्ररूपण, (2898) पुरुषोत्तम, (2899) पुरुषोत्तमा, (2900) पुष्करवर द्वीपार्ध में उत्तम पुरुष, (2901) पुष्प के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के रूप शील संपन्नता के चतुभँगों का प्ररूपण, (2902) पुष्पचूल दृष्टांत , (2903) पुष्पसृष्ट, (2904) पुष्पवृष्टि, (2905) राजापकारी दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2906) रामकृष्ण, (2907) रामकृष्णा, (2908) रामकृष्णा की भद्रोत्तर प्रतिमा और सिद्धगति, (2909) रात्निक पुरुषों के प्रकार, (2910) रात्रिपौरुषी विज्ञान , (2911) रत्नावलि का दृष्टान्त , (2912) रत्नद्वीप की देवी का माकंदी पुत्रों को दृष्टिविष सर्प के समीप जाने का निषेध, (2913) रत्नवृष्टि, (2914) रोग की उपेक्षा

से हानि : वृक्ष और ऋण दृष्टांत , (2915) ऋजु वक्र मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2916) ऋजु वक्र वृक्षों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2917) ऋजुजड़ शिष्य : नाटचप्रेक्षण दृष्टांत , (2918) ऋणार्त्त दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (2919) रुस, (2920) रुसल्य, (2921) रुसी, (2922) ऋषभ, (2923) ऋषभ जिन-चरित्र, (2924) ऋषभ का अभिनिष्क्रमण , (2925) ऋषभ का जन्म , (2926) ऋषभ का प्रमाद काल , (2927) ऋषभ के पूर्वभव , (2928) ऋषभ की प्रथमता , (2929) ऋषभ नामकरण , (2930) ऋषभ स्वर , (2931) ऋषभ :, (2932) ऋषभा, (2933) ऋषभादि तीर्थकरों से पर्युषण-कल्प-स्थापन-समय-निरूपण, (2934) ऋषभदत्त, (2935) ऋषभदत्त और देवानन्दा का दर्शनार्थ आगमन, (2936) ऋषभदत्त और देवानंदा की महावीर-दर्शनाभिलाषा, (2937) ऋषभदत्त की भार्या देवानन्दा, (2938) ऋषभदत्त की प्रव्रज्याभिलाषा, (2939) ऋषभदत्त की सिद्धगति, (2940) ऋषभदत्त:, (2941) ऋषभकूट, (2942) ऋषभकूट पर्वत की अवस्थिति और प्रमाण, (2943) ऋषभमण्डलप्रविभक्ति :, (2944) ऋषभनाराच , (2945) ऋषभनाराच संहनन, (2946) ऋषभनाराचसंहनन, (2947) ऋषभपुर, (2948) ऋषभसेन, (2949) ऋषभस्वामी, (2950) ऋषभस्वामिन्, (2951) ऋषि, (2952) ऋषि आत्रेय , (2953) ऋषि:, (2954) ऋषिभाषित, (2955) ऋषिभद्रपुत्र, (2956) ऋषिभद्रपुत्रादिक श्रमणोपासक, (2957) ऋषिदास, (2958) ऋषिदास आदि की कथानकों का निर्देश, (2959) ऋषिदत्त, (2960) ऋषिदत्ता, (2961) ऋषिदत्तीय, (2962) ऋषिगिरि, (2963) ऋषिगुप्त, (2964) ऋषिगुप्तीय, (2965) ऋषिमण्डलस्तव, (2966) ऋषिमन्त्र, (2967) ऋषिमती, (2968) ऋषिपाल, (2969) ऋषिपालित, (2970) ऋषिपालिता, (2971) ऋषिशाप, (2972) रुषित, (2973) ऋषित :, (2974) ऋषितडाग, (2975) ऋषिवाद, (2976) ऋषिवादिक, (2977) ऋषिवादिका :, (2978) ऋषिवंश, (2979) ऋषिवृद्धि, (2980) रुष्ट, (2981) रुष्टवन्दन, (2982) ऋष्यमूक, (2983) साअड्ड (कृष्), (2984) साधारण अनिसृष्ट, (2985) साधर्म्य दृष्टान्त, (2986) साधर्म्य दृष्टांत, (2987) साध्वी-क्षेत्र और कुलस्थविर : भोजिक दृष्टांत , (2988) सादृश्य प्रत्यभिज्ञान, (2989) सामान्यदृष्ट अनुमान , (2990) सांख्य परिव्राजकों के अव्यक्त पुरुष-सम्बन्धि मन्तव्य, (2991) सारणा-वारणा : दो दृष्टांत , (2992) सारथि के दृष्टांत द्वारा योजक-वियोजक पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (2993) सास्वादन सम्यग्दृष्टि , (2994) सास्वादन सम्यग्दृष्टि जीवस्थान, (2995) सास्वादनसम्यग्दृष्टि, (2996) सात नरक पृथ्वियों में सम्यग्दृष्टियों आदि का उत्पाद-उद्वर्तन और अविरहितत्व का प्ररूपण, (2997) सातिशय मिथ्यादृष्टि, (2998) सावशेष असंसृष्ट ग्रहणैषणा, (2999) सच्चव (दृश्), (3000) सच्छर (दृश्), (3001) सद् दृष्टि, (3002) सदोष वसति : यंत्र प्रतिमा दृष्टांत , (3003) सदृश, (3004) सदृश आचारवान को स्थान न देने के प्रायश्चित्त सूत्र , (3005) सदृश अपराध में विसदृश दंड : कुमार दृष्टांत , (3006) सदृश पुद्गलों का बंध नहीं होता, (3007) सदृश पुद्गलों में द्विगुण स्पर्श अधिक हो तो परस्पर बंध होता है, (3008) सदृशकल्पी, (3009) सदृशकल्पी ही सांभोजिक , (3010) सदृशकृष्टि, (3011) सदृशयुति, (3012) सहज shtruशत्रु, (3013) सज्भ्क्तायपोरुसि, (3014) समाकृष्टि, (3015) समावृष्टि, (3016) समदृष्ट, (3017) समदृष्टि, (3018) समीचीनदृष्टिवर्णजनन, (3019) समुद्र के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3020) सम्यग् दृष्टि, (3021) सम्यग-मिथ्यादृष्टि , (3022) सम्यग्दृष्टि, (3023) सम्यग्दृष्टि आदि की अपेक्षा, (3024) सम्यग्दृष्टि को आध्यात्मिक विषय में भी संशय या विपरीत बोध, (3025) सम्यग्दृष्टि को संशय या विपरीत बोध, (3026) सम्यग्दृष्टि-मिथ्यादृष्टि चौबीसदंडकों में उत्पातादि का प्ररूपण, (3027) सम्यग्मिथ्यादृष्टि, (3028) सम्यक् दृष्टान्त की उपनय गाथायें, (3029) सम्यक् दृष्टि, (3030) सम्यक् मिथ्या दृष्टि, (3031) सम्यक्दृष्टि, (3032) सम्यमिथ्यादृष्टि, (3033) सर्प का दृष्टांत , (3034) सश्रुषा, (3035) सत्पुरुष, (3036) सत्पुरुषा, (3037) सत्व की विवक्षा से पुरुषों के पाँच भंगों का प्ररूपण, (3038) सत्य-असत्य परिणतादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3039) सत्यामृषा (मिश्र) भाषा आदि भाषाओं का निषेध , (3040) सत्यामृषा भाषा, (3041) सौधर्मादि 12 देवलोक के देवों की उत्कृष्ट स्थिति, (3042) सव्वव (दृश्), (3043) सेना के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3044) शातवाहन दृष्टांत , (3045) शबल दोष से विराधना : घट दृष्टांत , (3046) शैक्षनिस्फेटिका दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (3047) शक्तिसंपन्न आचार्य : कुमार दृष्टांत , (3048) शलाका पुरुष, (3049) शलाकापुरुष, (3050) शरीर जुङ्गित दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (3051) शरीरजड्ड दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (3052) शत सहस्त्र पृषक्त्व, (3053) शतऋषभ, (3054) शतवृषभ, (3055) शत्रुसह, (3056) शत्रुसेन, (3057) शय्यातर के असंसृष्ट पिंड के संसृष्ट कराने का निषेध व प्रायश्चित्त , (3058) शेष कर्मों का मंद अनुभाव : नैरयिक दृष्टांत , (3059) शेषवत् अनुमान के प्रकार और दृष्टांत , (3060) शंख के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3061) श्रद्धावान घरों में अदृष्ट पदार्थ मांगने का निषेध , (3062) श्रमण का दृष्टान्त, (3063) श्रमण की पृष्ठभूमि , (3064) श्रमणी-रक्षक वृषभ की अर्हता , (3065) श्रवण की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (3066) श्रीगृह की उपमा : तोसलिक दृष्टांत , (3067) श्रीकृष्ण और थावच्चापुत्र का परिसंवाद, (3068) श्रीकृष्ण द्वारा देवाराधन और देव ने लघुभ्राता होने के लिये कहा, (3069) श्रीकृष्ण का अनन्तर भव में पातल लोक में निवास, (3070) श्रीकृष्ण का देव आराधन, (3071) श्रीकृष्ण का द्रौपदी की गवेषणा के लिये आदेश, (3072) श्रीकृष्ण का नृसिंह रूप बनाना, (3073) श्रीकृष्ण का प्रस्थान, (3074) श्रीकृष्ण की आज्ञा से सुस्थित देव ने लवण समुद्र के मध्य में मार्ग बनाया, (3075) श्रीकृष्ण की गजसुकुमार-दर्शनाभिलाषा., (3076) श्रीकृष्ण की पर्युपासना, (3077) श्रीकृष्ण की योगक्षेम-घोषणा, (3078) श्रीकृष्ण को द्वारिका के विनाश से चिन्ता, (3079) श्रीकृष्ण ने अन्य के प्रव्रज्या ग्रहण में सहाय की घोषणा, (3080) श्रीकृष्ण ने चिन्ता का कारण पूछा, (3081) श्रीकृष्ण ने देवकी को अश्वासन दिया, (3082) श्रीकृष्ण ने द्वारिका के विनाश का कारण पूछा, (3083) श्रीकृष्ण ने पाण्डवों को निर्वासित कर दिया, (3084) श्रीकृष्ण ने पराजय कारण कहा और युद्ध किया, (3085) श्रीकृष्ण ने वृद्ध की सहायता की., (3086) श्रीकृष्ण वासुदेव की देवी पद्मावती, (3087) श्रेष्ठ पुण्डरीक को पाने में

असफल चार पुरुष , (3088) श्रृष्ट, (3089) श्रुत से पूर्ण और अपूर्ण, पूर्ण सदृश या अपूर्ण सदृश , (3090) श्रुतपुरुष, (3091) शुद्ध-अशुद्ध मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3092) शुद्ध-अशुद्ध वस्त्रों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3093) सिद्धों की उत्कृष्ट अवगाहना, (3094) सिद्धों की उत्कृष्ट अवगाहना 58, (3095) सिंह-वृषभ-मृग-परिषद्, (3096) स्कंध-देश-प्रदेश-परमाणु को समझने हेतु मोदक का दृष्टांत, (3097) स्मारणा आपातकटु : गुटिकांजन दृष्टांत , (3098) संभोज-असंभोजविधि-परीक्षा : कूप दृष्टांत , (3099) संदृष्टि, (3100) संजोअ (सं + दृश्), (3101) संशयमिथ्यादृष्टि, (3102) संसृष्ट, (3103) संसृष्ट असंसृष्ट शय्यातर पिंड के ग्रहण का विधि-निषेध , (3104) संसृष्ट ग्रहणैषणा, (3105) संसृष्ट हाथ आदि आहार ग्रहण के विधि-निषेध , (3106) संसृष्ट के अठारह प्रकार : पुराकर्म आदि , (3107) संसृष्टा, (3108) संसृष्टोपहूतं, (3109) संसृष्टोपहृत, (3110) संस्तृश, (3111) संत्रुष्ट, (3112) सोना-पुरुसु, (3113) सोने की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (3114) सूँघने की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (3115) सूक्ष्मदृष्टि से बंध के 2 ही कारण हैं, (3116) सूक्ष्मसाम्परायकृष्टि, (3117) सूपपुरुषः, (3118) सूर्य सदृश्य महर्षि , (3119) सूर्यसृष्ट, (3120) सूत्र और नयदृष्टि , (3121) सूत्र-अर्थ...कल्पिक : आर्यवज्र दृष्टांत , (3122) सूत्र-अर्थपौरुषी का निषेध क्यों ?, (3123) सूत्रग्रहण-प्रतिबोध : गज-श्लीपदी दृष्टांत , (3124) सोपक्रम कर्म के दृष्टांत , (3125) स्पर्श की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (3126) स्पृशद्गति, (3127) स्पृशति, (3128) स्पृष्ट, (3129) स्पृष्ट और बद्ध , (3130) स्पृष्ट बंध, (3131) स्पृष्टमात्रं, (3132) स्पृष्टश्रेणिका परिकर्म , (3133) स्पृष्टं, (3134) स्त्रीलिंगसिद्ध, पुरुषलिंगसिद्ध , (3135) सृष्टि विना, (3136) सृष्टिः, (3137) सृष्टिद्वयम्, (3138) सृष्टयविकारिता, (3139) स्तनदृष्टिदोष, (3140) स्तेन दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (3141) स्थापनापुरुष, (3142) स्थूल मृषावाद विरमण व्रत के अतिचार, (3143) स्थूल-मृषावाद-विरमण-व्रत का स्वरूप और अतिचार , (3144) स्थूलग्राही से सूक्ष्मग्राही : सिद्धार्थ आदि दृष्टांत , (3145) स्थूलमृषावाद विरमण व्रत के 5 अतिचार, (3146) स्थूलमृषावादविरमण, (3147) स्थूलमृषावादविरमण व्रत, (3148) स्थुलारुष्क, (3149) स्त्री आदिकों में काष्टादि के दृष्टांत द्वारा अन्तर के चतुर्विधत्व का प्ररूपण, (3150) स्त्री पुरुष नपुंसकलिंग में सिद्ध संख्या, (3151) स्त्री-पुरुष का अजीबजत्व काल, (3152) स्त्री-पुरुष-नपुंसक वेद का स्वरूप , (3153) स्त्री-पुरुष-नपुंसकों का अल्पबहुत्व, (3154) स्त्री-पुरुष-नपुसंकों की कायस्थिति का प्ररूपण, (3155) सुदृष्टि, (3156) सुगत-दुर्गत की अपेक्षा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3157) सुकृष्ण, (3158) सुकृष्णा, (3159) सुकृष्णा की भिक्षु प्रतिमा और सिद्धगति, (3160) सुकृष्टि, (3161) स्व-पर का निग्रह करने की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3162) स्वभावविप्रकृष्ट, (3163) स्वगुरुस्थानसंक्रान्ति, (3164) ताड़फल गिराने वाले पुरुष की क्रियाओं का प्ररूपण, (3165) तारों की उत्कृष्ट स्थिति, (3166) तमस्काय में दृश्य पृथ्वीकाय और तेजस्काय के अभाव का प्ररूपण, (3167) तपे हुए लोहे को उलट-पुलट करने वाले पुरुष की क्रियाओं का प्ररूपण, (3168) तपोभावना से इन्द्रिययोगाचार्य : सिंह दृष्टांत , (3169) तत्पुरुष, (3170) तीन करण : चींटी का दृष्टांत , (3171) ठहरने की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (3172) तिर्यंच : उत्कृष्ट-जघन्य अवधि , (3173) तिर्यंच में मैथुन संज्ञा : सिंहनी दृष्टांत , (3174) त्रेडवी दृष्टि, (3175) त्रिकालविषयार्थदृश्, (3176) त्रिपृष्ठ, (3177) त्रिपृष्ठ वासुदेव, (3178) त्रिषष्टिपुरुष, (3179) तृस, (3180) तृष्, (3181) तृषा, (3182) तृषा परीषह, (3183) तृषा-परीषह, (3184) तृषापरीषहजय, (3185) तृष्णा, (3186) तृष्णा को लता की उपमा , (3187) तृष्णाः, (3188) तृशूल, (3189) तृसिउ, (3190) तृतीय पौरुषी समाचारी , (3191) तुम्ब के दृष्टांत से जीवों के गुरुत्व-लघुत्व के कारणों का प्ररूपण, (3192) तुरुष्क, (3193) उच्च-नीच विचारों की विवक्षा से पुरुषों के चतुर्विधत्व का प्ररूपण, (3194) उदकराजिसदृश क्रोध, (3195) उदय-अस्त की विवक्षा से पुरुषों के चतुर्विधत्व का प्ररूपण, (3196) उदयबन्धोत्कृष्टा, (3197) उदयसंक्रमोत्कृष्ट, (3198) उदयसंक्रमोत्कृष्टा, (3199) उदयवन्धोत्कृष्ट, (3200) उड्डरुस्स, (3201) उड्डरुस्से, (3202) उद्घाटा पौरुषी में अंगपठन निषिद्ध क्यों ?, (3203) उदुरुसेज्जा, (3204) उन्मत्त दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (3205) उन्नत-प्रणत मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3206) उन्नत-प्रणत वृक्षों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3207) उपाध्याय (अभिषेक) : सूत्रवाचक, वृषभ , (3208) उपक्रम से मृत्यु के दृष्टांत, (3209) उपसर्ग करने वाले को कृष्ण ने जाना., (3210) उपसर्ग श्रवण से श्रीकृष्ण का क्रुद्ध होना., (3211) उपशम सम्यक् दृष्टि, (3212) उपशमसम्यग्दृष्टि, (3213) उपस्पृशति, (3214) उपतृष्णा, (3215) उपतृष्टयो, (3216) उप्फुस (उत्+स्पृश्), (3217) उरुसोल्ल, (3218) उत्कृष्ट, (3219) उत्कृष्ट युक्त-असंख्येय , (3220) उत्कृष्ट 170 विहरमान जिन, (3221) उत्कृष्ट आतापना, (3222) उत्कृष्ट आयुस्थिति में सम्यक्त्व-प्राप्ति , (3223) उत्कृष्ट अनन्त-अनन्त , (3224) उत्कृष्ट अनन्त-अनन्त : एक विमर्श , (3225) उत्कृष्ट अन्तरात्मा, (3226) उत्कृष्ट असंख्यात-असंख्यात , (3227) उत्कृष्ट असंख्येय-असंख्येय , (3228) उत्कृष्ट बहुश्रुत, (3229) उत्कृष्ट चैत्यवंदन, (3230) उत्कृष्ट चिरप्रव्रजित, (3231) उत्कृष्ट दाह, (3232) उत्कृष्ट गीतार्थ, (3233) उत्कृष्ट ज्ञान, (3234) उत्कृष्ट गुण पुद्गल, (3235) उत्कृष्ट काल , (3236) उत्कृष्ट मंगल, (3237) उत्कृष्ट नैरयिकों की विवक्षा से, (3238) उत्कृष्ट निक्षेप, (3239) उत्कृष्ट पद, (3240) उत्कृष्ट पदमीमांसा, (3241) उत्कृष्ट परीत-अनन्त , (3242) उत्कृष्ट परीत-असंख्येय , (3243) उत्कृष्ट परीतानन्त, (3244) उत्कृष्ट प्रायश्चित्त : जीत व्यवहार , (3245) उत्कृष्ट रूप सम्पदा , (3246) उत्कृष्ट सान्तरअवक्रमणकाल, (3247) उत्कृष्ट शातकुम्भ, (3248) उत्कृष्ट श्रावक, (3249) उत्कृष्ट सिंहनिष्क्रीडित, (3250) उत्कृष्ट संख्यात : पल्य का दृष्टांत , (3251) उत्कृष्ट स्थितिप्राप्तक, (3252) उत्कृष्ट स्थितिसंक्लेश, (3253) उत्कृष्ट युक्त-अनन्त , (3254) उत्कृष्ट-मध्यम-जघन्य उपधि , (3255) उत्कृष्टासंख्येयायंख्येय, (3256) उत्कृष्टमंगल , (3257) उत्कृष्टमोक्षः, (3258) उत्कृष्टपदाल्पबहुत्व, (3259) उत्कृष्टतः 48 निर्यामक, (3260) उत्कृष्टि, (3261) उत्कृष्टोपासकस्थान, (3262) उत्सारकल्प

धूमकेतु सदृश , (3263) उत्सारकल्प के हेतु : ढंढणमुनि आदि दृष्टांत , (3264) उत्सारण के दोष : उत्सारवाचक दृष्टांत , (3265) उत्सृष्टम्, (3266) उत्तान और गंभीर उदक के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3267) उत्तम पुरुष, (3268) उत्तमपुरुष, (3269) उत्तर कर्मप्रकृतियों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति और अबाधा का प्ररूपण, (3270) उत्तर प्रकृतियों की उत्कृष्ट स्थिति , (3271) उत्तरार्ध कच्छविजय में ऋषभकूटपर्वत की अवस्थिति और प्रमाण, (3272) वाद के अनर्ह : चाणक्य-नलदाम दृष्टांत , (3273) वाक्पारुष्य, (3274) वार्तिक (भाष्यकार) : मांखफलक दृष्टांत , (3275) वातमंडलिका के दृष्टांत द्वारा स्त्रियों के चतुर्विधत्व का प्ररूपण, (3276) वातपृष्ठ, (3277) वातसृष्ट, (3278) वचनगुप्ति : साधु-ज्ञातिजन दृष्टांत , (3279) वचनपुरुषताव्यसन, (3280) वध्य पुरुष के दर्शन से वैराग्य और प्रव्रज्या, (3281) वैधर्म्य दृष्टांत, (3282) वैद्यपुत्र का दृष्टांत , (3283) वैमानिक देवियों की उत्कृष्ट स्थिति (कोष्टक), (3284) वैमानिक देवों की उत्कृष्ट-जघन्य स्थिति (कोष्टक), (3285) वैनयिकमिथ्यादृस्टी, (3286) वैरसृष्ट, (3287) वैयावृत्य करने की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3288) वज्ज (दृश्), (3289) वज्र ऋषभनाराच संहनन, (3290) वज्र वृषभ नाराच संहनन, (3291) वज्रऋषभनाराच , (3292) वज्रऋषभनाराच संहनन, (3293) वज्रसृष्ट, (3294) वज्त्रवृषभनाराच, (3295) वन खण्ड के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3296) वनखण्ड में देवी द्वारा सूलीपर आरोपित पुरुष के दर्शन, (3297) वन्दन कर्म में शीतलाचार्य का दृष्टान्त, (3298) वन्दन के 5 प्रकार में 5 दृष्टान्त, (3299) वणिक्-मरुक और निधि दृष्टांत , (3300) वरवृषभा, (3301) वर्धकिरत्न और धनिक दृष्टांत , (3302) वर्धमान अवधि (परमावधि) का उत्कृष्ट क्षेत्र : अग्नि जीवों का दृष्टांत , (3303) वर्गणा के भेदों का प्रयोजन : कुविकर्ण दृष्टांत , (3304) वर्ज्य के दर्शन उपशमन और उदीरण की विवक्षा से पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3305) वर्षा की परीक्षा करने वाले पुरुष की क्रियाओं का प्ररूपण, (3306) वर्षकृष्ण, (3307) वरुण के मरने पर देवकृत वृष्टि, (3308) वसति का दृष्टान्त , (3309) वस्त्र में पुद्गलोपचय के दृष्टान्त द्वारा जीव-चौबीसदंडकों में कर्मोपचय का प्ररूपण, (3310) वेदनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, (3311) वेदउपघात-उपकरणउपघात-दृष्टांत , (3312) वीर पुरुष का पराक्रम , (3313) वीर-गौतम दृष्टांत , (3314) वीर-गौतम-कपिलसुत दृष्टांत , (3315) वीरकृष्ण, (3316) वीरकृष्णा, (3317) वीरकृष्णा की महासर्वतोभद्रप्रतिमा और सिद्धगति, (3318) वीरकृष्णमित्र, (3319) वीरसृष्ट, (3320) वेश : व्यावहारिक-नैश्चयिक दृष्टिकोण , (3321) वेश के प्रति दृष्टिकोण , (3322) विभाषा : अश्व दृष्टांत , (3323) विच्छिप्प (वि + स्पृश्), (3324) विच्छिव (वि + स्पृश्), (3325) विकृष्ट क्षपक, (3326) विकृष्ट तप, (3327) विमृश्यकारी, (3328) विनय ज्ञानाचार : हरिकेश-श्रेणिक दृष्टांत , (3329) विनय प्रतिपन्न पुरुष , (3330) विपुलतृष, (3331) विरतसम्यग्दृष्टि, (3332) विरतसम्यग्दृष्टि, (3333) विसदृश, (3334) विषयदुष्ट दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (3335) विशेषदृष्ट अनुमान , (3336) विश्वदृष्टा, (3337) विस्तारदृस्टी, (3338) विविध दृष्टांतों द्वारा महावेदना और महानिर्जरा युक्त जीवों का प्ररूपण, (3339) विविध विवक्षा से पुरुषों के त्रिविधत्व का प्ररूपण, (3340) व्रण दृष्टांत के द्वारा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3341) व्रण का दृष्टांत , (3342) वृद्ध दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (3343) वृक्षमूलादि को गिराने वाले पुरुष की क्रियाओं का प्ररूपण, (3344) वृष, (3345) वृषाधीश, (3346) वृषानन्त, (3347) वृषायुध, (3348) वृषभ, (3349) वृषभ : मंडलीनियोजक, कार्यचिन्तक , (3350) वृषभ क्षेत्र , (3351) वृषभ सम भवाटवी पारकर्ता , (3352) वृषभ संस्थान , (3353) वृषभ संस्थान वाली वसति , (3354) वृषभान-तनया, (3355) वृषभांक, (3356) वृषभांकित ध्वजा, (3357) वृषभानुजात, (3358) वृषभानुतनया, (3359) वृषभदत्त, (3360) वृषभध्वज, (3361) वृषभग्रामः, (3362) वृषभपर्वत, (3363) वृषभसेन, (3364) वृषभवाहण, (3365) वृषध्वज, (3366) वृषकेतु, (3367) वृषपति, (3368) वृषसेन, (3369) वृषसेना, (3370) वृश्चिक आदि विद्याएं , (3371) वृषीमान्, (3372) वृष्किम, (3373) वृष्णि, (3374) वृष्णिदशा, (3375) वृषोद्भव, (3376) वृश्चिक, (3377) वृष्य, (3378) वृष्यरसत्याग, (3379) वृष्येष्ट रस, (3380) वृष्येष्टरस, (3381) व्याध-दृष्टांत , (3382) व्याधि ग्रस्त दीक्षा के अयोग्य पुरुष, (3383) व्यतिकृष्ट काल (उद्घाटा पौरुषी) : स्वाध्याय विकल्प , (3384) व्यतिकृष्ट काल में निग्रन्थ के लिए स्वाध्याय निषेध , (3385) व्यतिरेक दृष्टान्त, (3386) व्यवहार दृष्टि, (3387) व्यवहारामूढदृष्टि, (3388) व्यंतर देव-देवियों की उत्कृष्ट-जघन्य स्थिति (कोष्टक), (3389) व्यंतर देवों की उत्कृष्ट स्थिति, (3390) व्युतसृष्ट : त्यक्तदेह , (3391) व्युत्सृष्यकाय, (3392) व्युत्तस्रुष्टमरण, (3393) यान के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के युक्तायुक्त चतुभँगों का प्ररूपण, (3394) यात्रापथ में वृषभ के कर्त्तव्य , (3395) यद्दृष्ट आलोचना, (3396) यथादृष्ट, (3397) यथाप्रवृत्तिकरण : धान्यपल्य का दृष्टांत , (3398) यतिवृषभ, (3399) योगकृष्टि, (3400) योग्य-अयोग्य श्रोता : मुद्गशैल आदि दृष्टांत , (3401) युद्ध की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण, (3402) युगाविपुरुष, (3403) युगपत्सृष्टिः, (3404) युग्य गमन दृष्टांत द्वारा पथोत्पथगामी पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3405) युग्य के दृष्टांत द्वारा युक्तायुक्त पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (3406) आचार्य आदि की निश्रा : द्विसंगृहीत-त्रिसंगृहीत , (3407) आधरिसेहिति, (3408) आधरिसितो, (3409) आगरिस, (3410) आहारक शरीर : संघातपरिशाटकरण , (3411) आमरिसोसहि, (3412) आरक्खियपुरिसो, (3413) आवरिसणं, (3414) आयाणपरिसाडे, (3415) आयरिस, (3416) आयरिसो, (3417) अभिलावपुरिसे, (3418) अभिवड्ढियवरिसं, (3419) अदर्शन परिषह, (3420) अद्धाणपरिस्संतो, (3421) अगारिसामाइयंगाइं, (3422) अज्ञा परिषद् , (3423) अज्ञान परिषह, (3424) अज्ञानपरिषह, (3425) अज्ञपरिषद्, (3426) अक्षरकोविदपरिषद्, (3427) अलोभ परिषह, (3428) अमनोज्ञ जल परिष्ठान का प्रायश्चित्त सूत्र , (3429) अमरिसा, (3430) अमरिसणा, (3431) अमरिसिओ, (3432) अमरिसं, (3433) अम्बरिसी, (3434) अंबरिस, (3435) अंबरिस परमाधामी, (3436) अंबरिसे, (3437) अंबरिसी, (3438) अंबरिसि, (3439) अनेरिसिउ, (3440) अंगरिसी, (3441) अंगरिसि, (3442) अंगरिसि भारद्वाय, (3443) अणियदरिसणं, (3444) अपरिसाडी, (3445) अपरिसाडि, (3446) अपरिसाडिं, (3447)

अपरिशाटिरूप संस्तारक, (3448) अपरिशेष, (3449) अपरिश्रावी, (3450) अपरिश्रावित्, (3451) अपरिश्रावित्, (3452) अपरिस्रावित, (3453) अपरिस्साइ, (3454) अपरिस्सावी, (3455) अपरिसुद्धं, (3456) अपोरिसियं, (3457) अप्परिसाडियं, (3458) अप्रासुक आहार-परिष्ठापन विधि , (3459) अपुरिस, (3460) अपुरिसागारपरक्कम, (3461) अपुरिसक्कारपरक्कमे, (3462) अपुरिसंतरकडं, (3463) अर्हन्त अरिष्टनेमि ने चारयाम धर्म की देशना दी, (3464) अर्हत् अरिष्टनेमि , (3465) अर्हत् अरिष्टनेमि का अभिनिष्क्रमण , (3466) अर्हत् अरिष्टनेमि का तीर्थ-चतुष्टय , (3467) अर्हत अरिष्टनेमि के कल्याणक नक्षत्र , (3468) अरिस, (3469) अरिसा, (3470) अरिषड्वर्गः, (3471) अरिषड्वर्गन्तिर्गत, (3472) अरिषड्वर्ग, (3473) अरिष्ट, (3474) अरिष्टा, (3475) अरिष्टावती, (3476) अरिष्टनगर, (3477) अरिष्टनगरम्, (3478) अरिष्टनेमि, (3479) अरिष्टपुर, (3480) अरिष्टपुरी, (3481) अरिष्टसेन, (3482) अरिष्ठपुरम्, (3483) अरिष्या, (3484) अरिसिल्ल, (3485) अरिसंज्वर, (3486) अरिसंत्रास, (3487) अरिसूदन, (3488) असच्चमरिसा, (3489) असम्यकत्व परिषह, (3490) अत्रिसुत, (3491) अत्तसरिसो, (3492) औदारिकशरीर : संघातपरिशाटकरण , (3493) अवद्धपोरिसी, (3494) अवफरिसो, (3495) अविज्जापुरिसा, (3496) बाहिपरिसरो, (3497) बाह्य-आभ्यंतर परिषद्, (3498) बावत्तरिसव्वसुमिण, (3499) बधपरिषह, (3500) बलि की परिषदाएँ, (3501) बलि की तीन प्रकार की परिषदाओं में देव-देवियों की संख्या, (3502) बीभत्थादरिसण्णिज्जा, (3503) भ. अरिष्ट नेमि-चरित्र, (3504) भ. अरिष्टनेमि का धर्मोपदेश और गौतम की प्रव्रज्या, (3505) भ. अरिष्टनेमि का निर्वाण, (3506) भ. अरिष्टनेमि का समवसरण, (3507) भ. अरिष्टनेमि के समीप अणीयस की प्रव्रज्या और शत्रुंजय पर्वत पर सिद्धी, (3508) भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में अणीयस कुमार और अन्य अणगार, (3509) भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में चित्त संभूति का कथन, (3510) भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में द्रोपदी का कथानक, (3511) भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में गजसुकुमार आदि अणगार, (3512) भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में गौतम आदि अणगार, (3513) भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में निषढादि श्रमण, (3514) भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में पद्मावती आदि श्रर्मणियों के कथानक, (3515) भ. अरिष्टनेमि के तीर्थ में थावच्चापुत्र और अन्य श्रमण, (3516) भ. अरिष्टनेमि ने धर्मदेशना दी., (3517) भ. अरिष्टनेमि ने गजसुकुमार की सिद्धगति कही., (3518) भ. अरिष्टनेमि ने निषढ के महाविदेह में उत्पन्न होकर सिद्ध होने की कही, (3519) भ. अरिष्टनेमि ने सुलसा का चरित्र कहकर शंका का समाधान किया, (3520) भ. अरिष्टनेमि से वरदत्त ने निषढ की गति के सम्बन्ध में पूछा-भगवान् ने सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न होने का कहा, (3521) भ. अरिष्टनेमि तीर्थ में सुमुख आदि कुमार श्रमण, (3522) भ. वर्धमान की परिषद् में पूर्णभद्र देव ने नृत्य किया, (3523) भावपुरिस, (3524) भगवान् की धर्मदेशना और बाद में श्रेणिक आदि की परिषद् का लौटना, (3525) भवनपतियों की परिषदाएँ - चमर की परिषदाएँ, (3526) भीतपरिषद्, (3527) भेरिसंठिय, (3528) भोगपुरिस, (3529) भोगपुरिसा, (3530) भोगपुरिसत्ता, (3531) भोइयपुरिसो, (3532) भूरिश्रवा, (3533) भुअपरिसप्पा, (3534) भुजपरिसर्प, (3535) भुजपरिसर्प जीवों का वर्ग, (3536) भुयपरिसप्प, (3537) ब्रह्मविद्वरिष्ठः, (3538) बुब्बुयवरिस, (3539) बुद्धिमतीपरिसा, (3540) चमर की तीन परिषदाओं के प्रयोजन, (3541) चण्डा परिषद्, (3542) चर्या परिषह, (3543) चर्या-परिषह, (3544) चत्तारिसईं, (3545) चतुरिशर : क्रियाकर्म, (3546) छह अणगारों का तप संकल्प भ. अरिष्टनेमि की आज्ञा, (3547) दण्डादि के परिष्कार करवाने का प्रायश्चित्त सूत्र , (3548) दण्डादि परिस्कार सम्बन्धी प्रायश्चित्त , (3549) दरिसाओ, (3550) दरिसाव, (3551) दरिसावेउ, (3552) दरिसावं, (3553) दरिसण, (3554) दरिसणावरणिज्ज, (3555) दरिसणपुलाओ, (3556) दरिसणिज्ज, (3557) दरिसणिज्जा, (3558) देउलदरिसणं, (3559) देवकी और गजसुकुमार का परिसंवाद, (3560) देय परिष्ठापनीय आहार , (3561) धारिणी और मेघकुमार का परिसंवाद, (3562) धम्मपुरिसा, (3563) धरिसेहि, (3564) धरिसेइ, (3565) धरिसिया, (3566) धरिसियामो, (3567) धीरपुरिस, (3568) धीरपुरिसा, (3569) धीरपुरिसपन्नत्तं, (3570) दंश मशक परिषह, (3571) दुद्धरिस, (3572) दुद्धरिसतरा, (3573) दुद्धरिसं, (3574) दुमरिस, (3575) दुर्विदग्ध परिषद्, (3576) दुविदग्धा परिषद् , (3577) दुयड्ढपोरिसी, (3578) एरिस, (3579) एरिसु, (3580) गरिष्ठ, (3581) गरिष्ठगी, (3582) घरिसूत्र, (3583) घरिसूत्तु, (3584) गिरिसरिद्ग्रावघोलना न्याय , (3585) गिरिशिखर, (3586) गिरिसंधि, (3587) ज्ञा परिषद् , (3588) गंगा प्रपातकुण्ड त्रिसोपान प्रतिरूपक, (3589) ज्ञपरिषद्, (3590) गृहीत लवण के परिभोग और परिष्ठापन की विधि , (3591) हरिस, (3592) हरिसागओ, (3593) हरिसागर, (3594) हरिसह, (3595) हरिसलिला महानदी का लवणसमुद्र में मिखना, (3596) हरिसलिला महानदी के प्रपातादि का प्रमाण, (3597) हरिसलिला नदी, (3598) हरिसलिला प्रपातकुण्ड के प्रमाणादि , (3599) हरिसवसविसप्पमाणहियए, (3600) हरिसय, (3601) हरिसीय, (3602) हरिसेण, (3603) हरिशर्मा, (3604) हरिश्चन्द्र, (3605) हरिषेण, (3606) हरिषेण चक्रवर्ती, (3607) हरिषेण चक्रवर्ती मुक्त हुआ, (3608) हरिषेणा, (3609) हरिश्मश्रु, (3610) हरिसोल्लिय, (3611) हरिस्सह, (3612) हरिस्सह कूट के नाम का हेतु, (3613) हरिस्सह कूट की अवस्थिति और प्रमाण, (3614) हरिस्सहा, (3615) हरिस्सहकूड, (3616) हरिस्सहकूट, (3617) हरिस्सहकुड, (3618) हरिवरिस, (3619) हेमपुरिस, (3620) हिरिसत्त, (3621) हिरिसिरि, (3622) जाता परिषद्, (3623) जीवप्रयोगकरण : संघातपरिशाटकरण , (3624) जुद्धकित्तिपुरिसा, (3625) कापुरिस, (3626) करिष्यति दान, (3627) कसैले पानक के परिष्ठापन निषेध , (3628) केरिसविउव्वणा, (3629) खलयारिस, (3630) खट दरिशण, (3631) किंपुरिस, (3632) कोडिवरिस, (3633) कोडिवरिसिया, (3634) कुमारमहरिसि, (3635) लौकिक परिषद् के प्रकार , (3636) लयापुरिस, (3637) लोहारबरिसा, (3638) लोकोत्तर परिषद् के प्रकार , (3639) लोमहरिस, (3640) मायामरिसा, (3641) महामोहाद्रिसूदन, (3642) महापुरिस, (3643) महारिसि, (3644) महच्चपरिसा, (3645) महरिसी, (3646) मेरुगिरितुंगसरिस, (3647) मिगपरिसा, (3648) मंसवरिसं, (3649) मूलयपत्तसरिसया, (3650) मुद्रिश्वर, (3651) निदरिसण, (3652) णिग्घरिस, (3653) णिप्फरिस, (3654) निसीहियापरिसहे,

(3655) निषढ की भ. अरिष्टनेमि के दर्शन की इच्छा, (3656) निषढ की इच्छा को जानकर भ. अरिष्टनेमि का आगमन, (3657) निषध्यापरिषहविजय, (3658) निषद्यापरिषह, (3659) निषिद्ध परिष्ठापना सम्बन्धी प्रायश्चित्त सूत्र, (3660) निषिद्ध स्थानों पर उच्चार-प्रस्रवण परिष्ठापन के प्रायश्चित्त सूत्र , (3661) नित्थरिस्सामि, (3662) णिव्वेरिस, (3663) ओहरिस, (3664) ऊरिसंकिअ, (3665) पारिसाडणिया, (3666) पारिसाडि, (3667) पारिषद, (3668) पारिषद्य, (3669) पारिषध, (3670) पारिषध्य, (3671) पारिषद्य, (3672) पारिषद्या :, (3673) पारिष्ठापनिका आकार , (3674) पातरिसि, (3675) पात्र का स्वयं परिष्कार करने का प्रायश्चित्त सूत्र , (3676) पात्र के परिष्कार करवाने का प्रायश्चित्त सूत्र , (3677) पाउक्करिस्सामि, (3678) पगरिस, (3679) पमाणवं पुरिसो, (3680) परिसा, (3681) परिसाड, (3682) परिसाडइत्ता, (3683) परिसाडणा, (3684) परिसाडी, (3685) परिसाडि, (3686) परिसाम (शम्), (3687) परिसामियं, (3688) परिसामंत, (3689) परिसाट, (3690) परिसाविय, (3691) परिसडइ, (3692) परिसडिय, (3693) परिसडियकंदाहरा, (3694) परिसडियकंदमूलपंडुपत्तपुप्फफलाहार, (3695) परिसह, (3696) परिसक्किर, (3697) परिसण, (3698) परिसप्प, (3699) परिसर, (3700) परिसरि, (3701) परिसर्प, (3702) परिसर्प्प, (3703) परिसर्प्पण, (3704) परिसीजइ, (3705) परिसीनउ, (3706) परिसेवणापारंची, (3707) परिसेय, (3708) परिषा, (3709) परिशाटकरणं, (3710) परिशातनाकृति, (3711) परिषद्, (3712) परिषद् के प्रकार , (3713) परिषद् के प्रकार : ज्ञ-अज्ञ-दुर्विदग्ध , (3714) परिषद् के प्रकार : लौकिक-लोकोत्तर , (3715) परिषद् तीन के प्रकार , (3716) परिषद, (3717) परिषदा की धर्माराधना और स्वगृहगमन, (3718) परिषह, (3719) परिषह 22 (प्रवचन सारोद्धार द्वार 86), (3720) परिषह जय, (3721) परिशटितकन्दमूलपाण्डुपत्रपुष्पफलाहार, (3722) परिशेष न्याय, (3723) परिशेषानुमानम्, (3724) परिशेष:, (3725) परिशिल्पमाना, (3726) परिशिष्टम्, (3727) परिशोध, (3728) परिश्रव, (3729) परिष्ठापन के पश्चात् तप, स्वाध्याय , (3730) परिष्ठापना की निषेध , (3731) परिष्ठापना की विधि , (3732) परिष्ठापना की विधि-निषेध , (3733) परिष्ठापना समिति का स्वरुप , (3734) परिष्ठापना संयम, (3735) परिष्ठापनासंयम, (3736) परिष्ठापनीय आहार और परिष्ठापन विधि , (3737) परिष्ठापनिका समिति, (3738) परिसिल्ल, (3739) परिसिंच्चेज्जा, (3740) परिसिठ्ठं, (3741) परिसित्तग, (3742) परिसित्तिय, (3743) परिसंकमाण, (3744) परिसंखाय, (3745) परिसंख्याविधि:, (3746) परिसंता, (3747) परिसंठिय, (3748) परिसूअं, (3749) परिसोसिय, (3750) परिस्पंद, (3751) परिस्समं, (3752) परिस्सव, (3753) परिस्सवा, (3754) परिस्सवति, (3755) परिस्संत, (3756) परिस्तरण, (3757) परिस्तर्ण, (3758) परिस्थापन, (3759) परिस्थूरम, (3760) परिस्त्रव, (3761) परिसुक्कमुह, (3762) फरिसइ, (3763) फुसियवरिस, (3764) पितदरिसण, (3765) पियदरिसण, (3766) पूव्वपूरिस, (3767) पोरिसी, (3768) पोरिसीमंडल, (3769) पोरिसि, (3770) पोरिसिअद्धा, (3771) पोरिसिमंडल, (3772) पोरिसिं, (3773) प्राणियों से युक्त आहार के परिभोग और परिष्ठापन की विधि , (3774) प्रत्याख्यान और श्रुतग्रहण योग्य परिषद् , (3775) प्रयोगसम्पदा : परिषद्परिज्ञान आदि , (3776) पुरिस, (3777) पुरिसादानी, (3778) पुरिसादाणीय, (3779) पुरिसादाणिय, (3780) पुरिसच्छाया, (3781) पुरिसगार, (3782) पुरिसजाता, (3783) पुरिसजाया, (3784) पुरिसजुग, (3785) पुरिसजुगा, (3786) पुरिसकार, (3787) पुरिसक्कार, (3788) पुरिसक्कारपरक्कम, (3789) पुरिसलक्खण, (3790) पुरिसनपुंसगी, (3791) पुरिसनिवडण, (3792) पुरिसपंडरीअ, (3793) पुरिसपुंडरिय, (3794) पुरिसपुर, (3795) पुरिससीह, (3796) पुरिससेण, (3797) पुरिससेणे, (3798) पुरिससिंह, (3799) पुरिसवरगंधहत्थी, (3800) पुरिसवरगंधहत्थि, (3801) पुरिसवरपुंडरीय, (3802) पुरिसवेद, (3803) पुरिसवेसिणी, (3804) पुरिसवेय, (3805) पुरिसविचओ, (3806) पुरिसविजय, (3807) पुरिसविज्जा, (3808) पुरिसयार, (3809) पुरिसंतकाड, (3810) पुरिसोत्तम, (3811) पुरिसोवयार, (3812) पुरिसु हेम, (3813) पुरिसुत्तम, (3814) राजीमती-अरिष्टनेमि के पूर्वभव , (3815) रात्रिषेणा, (3816) रात्रिश्री, (3817) रिसावइ, (3818) रिसभ, (3819) रिसभा, (3820) रिसह, (3821) रिसहनाराय, (3822) रिसहेसर, (3823) रिसहेसरो, (3824) रिसओ, (3825) रइषत् प्रागभारा, (3826) रिषि, (3827) रइषित्व ऋद्धि, (3828) रिष्ट, (3829) रिष्टा, (3830) रिष्टाभ, (3831) रिष्टापती, (3832) रिष्टपुरी, (3833) रिष्ठं, (3834) रइश्वरवाद, (3835) रिश्यजिव्ह, (3836) रिसि, (3837) रिसिभासित, (3838) रिसिभासिय, (3839) रिसिदत्ता, (3840) रुधिरवरिस, (3841) रुहिरवरिस, (3842) साधु-साध्वी की आलोचना विधि : चतुष्कर्णा आदि परिषद् , (3843) सारिसुं, (3844) सातिरेगअउणट्ठिपोरिसी, (3845) सहदारदरिसिणो, (3846) सज्म्क्तगिरिसिद्धओ, (3847) समसरिस, (3848) समिता परिषद्, (3849) सङ्घातपरिशाटकरण, (3850) सप्पुरिस, (3851) सपुरिस, (3852) सरद्रहतडागपरिशोषण, (3853) सरिस, (3854) सरिसाहुल, (3855) सरिसए, (3856) सरिसउ, (3857) सरिसव, (3858) सरिसवा, (3859) सरिसवय, (3860) सरिसवया, (3861) सरिसवों की भक्ष्याभक्ष्य विचारणा, (3862) सरिसव्व, (3863) सरिसव्वया, (3864) सरिसया, (3865) सरिसीय, (3866) सरिष्यति, (3867) सरिसिउ, (3868) सतरिसभ, (3869) सव्वदरिसणावरणिज्ज, (3870) सव्वदरिसी, (3871) सयरिसह, (3872) सीहपरिसा, (3873) शव-परिष्ठापन दिन में या रात में ? , (3874) शव-परिष्ठापन के लिए निर्गमन , (3875) शवपरिष्ठापन हेतु भूमि-प्रतिलेखना , (3876) शवपरिष्ठापन विधि , (3877) शय्या-परिषह, (3878) शय्यापरिषहक्षमा, (3879) शीतपरिषह, (3880) शेष भवनपतियों की परिषदायें, (3881) श्मशानभूमि में परिष्ठापन की विधि , (3882) श्रुतन्द्रिसृता, (3883) सिलावरिस, (3884) सिंहपरिसा, (3885) सिरिस, (3886) सिरिसंभूआ, (3887) सिरिसंभूता, (3888) सिरिसंभूया, (3889) सिरिसोम, (3890) सिरिसोमणस, (3891) सिरिसोमनस, (3892) संघातन-परिशातनकृति, (3893) संघातितअपरिशाटिरूप एकांगिक संस्तर, (3894) संघरिस, (3895) संघरिससमुट्ठिय, (3896) संज्म्क्तब्भरागसरिस, (3897) संकरिसण, (3898) सोना-पोरिस, (3899) सोना-पुरिसु, (3900) सूई आदि के परिष्कार के प्रायश्चित्त सूत्र , (3901) सूवपुरिस, (3902) स्त्री परिषद में रात्रि धर्म कथा करने का प्रायश्चित्त सूत्र , (3903) स्त्री-परिषह-जय, (3904) सुदरिसण, (3905)

सुक्यपुग्गलपरिसाड, (3906) सुपरिस, (3907) सुयमुहगुज्भ्क्तद्धरागसरिस, (3908) तज्जातपारिस्थापनिकी, (3909) तीन प्रकार की चमर परिषदाओं में देवियों की संख्या, (3910) तीन प्रकार की चमर परिषदाओं में देवों की संख्या, (3911) थीपुरिससंजोए, (3912) तिमिरिस, (3913) तिरिस, (3914) त्रिस, (3915) त्रिसठि, (3916) त्रिसट्ठ, (3917) त्रिसेंथियां, (3918) त्रिशला, (3919) त्रिशला के स्वप्न और उनका फलित , (3920) त्रिशिखमुद्रा, (3921) त्रिशिखर, (3922) त्रिशिरस्, (3923) त्रिशूल, (3924) त्रिशूलानि, (3925) त्रिश्रृंग, (3926) त्रिसिउ, (3927) त्रिसियउ, (3928) त्रिसोपान प्रतिरूपकों का वर्णन, (3929) त्रिसोपान प्रतिरूपकों के आगे तोरण, (3930) त्रिसोपान प्रतिरूपकों के तोरण, (3931) त्रिस्थानबन्धक, (3932) त्रिस्थानपतित (त्रिस्थानिक), (3933) त्रिस्थानिक रस, (3934) उदहीसरिसनामाणं, (3935) उदकादि से युक्त आहार के परिभोग और परिष्ठापन की विधि , (3936) उडंकरिसी, (3937) उड्डुंकरिसि, (3938) उग्घाडाए पोरिसिए, (3939) उग्घाडपोरिसि, (3940) उघरिसा, (3941) उक्करिस, (3942) उक्करिसियखग्गो, (3943) उपधि परिष्ठापन की प्राचीन विधि , (3944) उरगपरिसप्पा, (3945) उरपरिसप्प, (3946) उरपरिसप्पा, (3947) उरपरिसर्प जीवों का वर्ग, (3948) उरोपरिसप्प, (3949) उष्णपरिषहसहन, (3950) उत्परिसर्प, (3951) उत्तमपुरिस, (3952) वाचनायोग्य परिषद् , (3953) वालवरिस, (3954) वाणारिस, (3955) वाणव्यन्तरों की परिषदों के देवदेवियों की संख्या, (3956) वारिसेण, (3957) वारिसेणा, (3958) वारिसेणे, (3959) वारिषेण, (3960) वारिषेणा, (3961) वह्निशिख, (3962) वैमानिक देवेन्द्रों की परिषदाएँ, (3963) वइरिसि, (3964) वैयावृत्त्यकारिशुद्धि, (3965) वज्जरिसह, (3966) वज्जरिसहणाराय, (3967) वज्जरिसहनाराय, (3968) वज्जरिसहनारायसंघयण, (3969) वज्जरिसहनारायं, (3970) वणारिस, (3971) वरपुरिस, (3972) वरपुरिसवसण, (3973) वरिस, (3974) वरिसाल, (3975) वरिसालय, (3976) वरिसारत्त, (3977) वरिसचडकरक, (3978) वरिसधर, (3979) वरिसकण्ह, (3980) वरिसकण्हा, (3981) वरिसण, (3982) वरिससओवमा, (3983) वरिसवकण्ह, (3984) वरिष्ठ, (3985) वरिष्ठधी, (3986) वरिसियव्वं, (3987) वरिसोलग, (3988) वसभपरिसा, (3989) वेदपुरिसं, (3990) विदरिसण, (3991) विज्जापुरिसा, (3992) व्रतपरिसंख्यान, (3993) व्रिष्टय, (3994) वृतिपरिसंख्यान, (3995) वृत्ति परिसंख्यान, (3996) वृत्तिपरिसंख्यान, (3997) वृत्तिपरिसंख्यानातिचार, (3998) व्यतिरिष्ट, (3999) याचना परिषह, (4000) " एक्काइ " नामक राष्ट्कूट का प्रजा-पीड़न, (4001) आरासणउं, (4002) आराशस्तिकाय, (4003) अभग्नसेन ने राजा की सेना को परास्त कर दी, (4004) अभ्यासराशि, (4005) अधरास, (4006) अक्खयरासी, (4007) अक्षयराशि, (4008) अंद्रासन, (4009) अन्नप्राशन, (4010) अनुप्रास, (4011) अप्रासुक, (4012) अप्रासुक पानी लेने का निषेध , (4013) अप्रासुक पात्र-ग्रहण करने के निषेध , (4014) अप्रासुक वस्त्र ग्रहण करने का निषेध , (4015) असरासअ, (4016) अवद्धजवरासिसंठाणसंठिए, (4017) अव्यवहारराशि, (4018) बादर युग्मराशि, (4019) बरास, (4020) बरासकपूर, (4021) बसहिपायरास, (4022) भासरासी, (4023) भासरासि, (4024) भासरासिवण्णाभ, (4025) भास्करास्त्र, (4026) भावग्रासैषणा, (4027) भद्रासन, (4028) भद्राश्व, (4029) भस्मराशि, (4030) भीम के मरने के बाद गोत्रास को कूटग्राह-पद, (4031) भ्राष्ट्रपाक, (4032) चलित रास, (4033) चतुरास्य, (4034) चउरासी, (4035) चउरासीयउ, (4036) चिरास, (4037) चित्तप्रासाद परिणाम, (4038) चोरासी, (4039) चोरासी खाण, (4040) दत्ति-ग्रासपरिमाण, (4041) देहरासरु, (4042) देरासर, (4043) ध्रास, (4044) धृतराष्ट्र, (4045) धुवरासी, (4046) दुहरासि, (4047) दुरासय, (4048) दुरासया, (4049) ईश्वराश्रयाप्रमा, (4050) एगसाडियउत्तरासंगकरण, (4051) गतत्रास, (4052) घरास, (4053) गोग्रास, (4054) गोत्रास, (4055) गोत्रास का मांस-भक्षण और नरक आदि के भव, (4056) ग्रास, (4057) ग्रासैषणा, (4058) ग्रासैषणा 5 (प्रवचन सारोद्धार द्वार 95), (4059) ग्रासैषणा दोष, (4060) ग्रासैषणा दोष 5, (4061) ग्रासैषणादोष, (4062) ग्रासवुं, (4063) ग्रासीआ, (4064) इच्छा राशि, (4065) इन्द्रासनि, (4066) इतरेतराश्रय, (4067) इतरेतराश्रयः, (4068) जरासन्ध, (4069) जरासन्घ, (4070) जरासन्धारि, (4071) जरासिंध, (4072) जरासिंधु, (4073) जरासंध, (4074) जीव राशि, (4075) जीवराशि, (4076) जीवरासि, (4077) जिघ्रास मरण, (4078) कामराशि, (4079) कल्योजकल्योज राशि, (4080) खीरासव, (4081) खीरासवी, (4082) किसिपारासर, (4083) क्षीराश्रव, (4084) क्षीराश्रव लब्धि, (4085) क्षीरास्त्रावी, (4086) क्षीरास्त्रव, (4087) क्षीरास्त्रवी, (4088) मासरासिवण्णाभ, (4089) मात्राष्टक, (4090) मगरासणं, (4091) महाराष्ट्र, (4092) महाराष्ट्रः, (4093) मंत्रासरु, (4094) मूलप्रासादवतंसक का प्रमाण, (4095) मृगापुत्र के पूर्वभव की की एक्काइ " नामक राष्ट्कूट कथा, (4096) मुक्कधुरासंपाडगसेवी, (4097) नैराशी, (4098) नवराष्ट्र, (4099) निद्राशील पापश्रमण , (4100) णिरास, (4101) निराससे, (4102) निराशी, (4103) निराशि, (4104) निराशंस, (4105) निरासो, (4106) निरास्त्रव, (4107) निर्ग्रन्थी की वस्त्राषणा विधि , (4108) निर्वाण के अनन्तर भस्मराशि-ग्रह और उसका प्रभाव, (4109) निश्रास्थान, (4110) पारासर, (4111) पारासरढढण, (4112) पाराशर, (4113) पाराशरी, (4114) पारासुर, (4115) पासणिअ/पश्यक/प्राश्निक , (4116) पायरास, (4117) पायरासु, (4118) परासह, (4119) परासर, (4120) पराशर, (4121) परास्कन्दी, (4122) परासु :, (4123) परम्परासम्बन्धः, (4124) परम्पराश्रयचक्रक, (4125) परम्परास्थापना, (4126) परोणो-रास, (4127) प्रास, (4128) प्रासाद, (4129) प्रासाद प्रवेश, (4130) प्रासादबहुल, (4131) प्रासादवतंसकों का प्रमाण, (4132) प्राशन, (4133) प्राशे, (4134) प्राश्निक, (4135) प्राशुक, (4136) प्राश्यां, (4137) प्रासंति, (4138) प्रास्थाल, (4139) प्रासुक, (4140) प्रासुक जल, (4141) प्रासुक विहार स्वरुप प्ररूपण , (4142) प्रासुक-अप्रासुक स्थण्डिल में परठने का विधि-निषेध , (4143) प्रासुकाहार, (4144) प्रासुकमार्ग, (4145) प्रासुकविहार, (4146) प्रासुकेषणिउ, (4147) प्रातराश : , (4148) प्रायश्चित्त राशि की उत्पत्ति : असंख्य असंयमस्थान , (4149) प्रतिराश्यते, (4150) पुण्यराशि, (4151) पुष्फरास, (4152) पुत्र का \' गोत्रास \' नाम दिया, (4153) रास, (4154) रासह, (4155) रासी, (4156) राश, (4157) राशि, (4158) राशित्र्यच्यापकः, (4159) राशियुग्म, (4160) राष्ट, (4161) राष्ट्र, (4162) राष्ट्रधर्म,

(4163) राष्ट्रकूट, (4164) राष्ट्रकूट ने प्रव्रज्या लेने का निषेध किया, (4165) राष्ट्रपाल, (4166) राष्ट्रवर्धन, (4167) रासि, (4168) रासिजुम्म, (4169) रासिया, (4170) रासुलडउ, (4171) रासुलउ, (4172) रत्नराशि, (4173) रौद्रास्त्र, (4174) रोहगुप्त और त्रैराशिकवाद , (4175) रुद्राश्व, (4176) सालिपिट्ठरासो, (4177) साणावच्छादारासंघट्टणा, (4178) सपिराश्रवत्व, (4179) सरास, (4180) सरासण, (4181) सरासन, (4182) सरासणपट्टिए, (4183) सरासणपट्टिया, (4184) सरासणपट्टो, (4185) सरासणवट्टिया, (4186) सरासर, (4187) सर्पिरास्रव, (4188) सर्पिरास्त्रविणी, (4189) सौराष्ट्र, (4190) सौराष्ट्रिका, (4191) सीहोरासियं, (4192) शक्राशनि, (4193) शरासन, (4194) शूराशूर, (4195) सिरासयाइं, (4196) संत्रास, (4197) सूत्र-अर्थपद : प्रासाद का रूपक , (4198) सुहोरासो, (4199) सुराष्ट्र, (4200) सुराष्ट्रजनपद, (4201) सुरासुरिया, (4202) स्वस्तिकश्रीवत्सनन्दावर्त्तवर्द्धमानकभद्रासनकलशमत्स्यदर्पणरुपाष्टमङ्गलाकराभिनयात्मफः, (4203) तणरासि, (4204) तणरासिअ, (4205) तेजोजराशि, (4206) तेजोराशि, (4207) तेरासि, (4208) तेरासिओ, (4209) तेरासिय, (4210) तेरासिया, (4211) थेरासण, (4212) तिरासिप, (4213) त्रासइ, (4214) त्रासकडो, (4215) त्रासनी, (4216) त्रासवइ, (4217) त्रैराशिक, (4218) त्रैराशिक :, (4219) त्रैराशिका :, (4220) त्रैराशिककरणं, (4221) त्रैराशिकवाद, (4222) तुषराशि :, (4223) उज्झितक के गोत्रास भव का कथानक, (4224) उत्प्रासनं, (4225) उत्प्रासवचनं, (4226) उत्प्रासयेत्, (4227) उत्प्रास्यमान, (4228) उत्सर्ग-समिति : प्रासुक स्थण्डिल , (4229) उत्तरासाढा, (4230) उत्तरासाढाणक्खत्ते, (4231) उत्तरासमा, (4232) उत्तरासण, (4233) उत्तराषाढ, (4234) उत्तराषाढा, (4235) उत्तरासंग, (4236) वारासोरी, (4237) वज्रासन, (4238) वज्त्रास्य, (4239) वरासइ, (4240) वरासउ, (4241) वरासीयइ, (4242) वसहिपायरास, (4243) वस्त्र से पृथ्वीकाय आदि निकालने का प्राश्चित सूत्र , (4244) ववहाररासि, (4245) वीरासन, (4246) वीरासण, (4247) वीरासणिए, (4248) वीरासनिक, (4249) वीरासणिते, (4250) वीरासे, (4251) वेत्रासन, (4252) विकोसियधारासि, (4253) विस्तारासंख्यात, (4254) वित्रासन, (4255) व्रासिउ, (4256) व्रासु, (4257) व्यवहार राशि